अजय कुमार उत्तम
मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
फरवरी-९१

Scanned by CamScanner

वर्ष–११

अंक–२

फरवरी-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ द्यौः शान्ति वर्चस्व विश्व शान्तिः मनवः शान्ति
मनसः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः ।।

हे प्रभु ! यह सारा विश्व एक परिवार की तरह हो, सुख-दुःख में सहायक हो, परस्पर राष्ट्रों में मैत्री भाव एवं शान्ति हो, प्रत्येक मनुष्य के मन में शान्ति हो और आकाश से पृथ्वी तक सुख, उन्नति एवं शान्ति हो।

इस सड़े गले समाज में

एक नये साधक का निर्माण करना

जरूरी हो गया है

हकीकत में देखा जाय तो पिछले कई हजार वर्षों की मान्यताओं और रूढ़िग्रस्तता की वजह से समाज सड़ गल गया है, उसके विचार उसकी भावनाएं, उसका चिन्तन और उसके आचार-विचार वैसे ही परम्परागत बोदे और कमजोर हो गये हैं कि उनसे नवीन स्थिति का निर्माण संभव ही नहीं है।

युग तो बदल गया पर मान्यताएं नहीं बदलीं, अब ऋग्वेद कालीन ऋषियों का जमाना नहीं रहा, कि नदी या सिन्धु के किनारे बैठ कर वेद मन्त्रों का उच्चारण करने से ही देवताओं का आगमन हो जाय, या अब वह जमाना नहीं रहा कि हाथ में लोटा डोर लेकर जंगल में चले जांय और वहां पर जंगली जानवरों की तरह अपनी दाढ़ी-मूंछें बढ़ा कर योगी या सन्यासी होने का दम्भ भरें।

युग की मान्यताएं बदल गई हैं, और इसके साथ-साथ साधक को भी बदलना पड़ेगा, साधक उसी परम्परागत तरीके से साधनाओं में सफलता नहीं पा सकता, उन्हीं तरीकों से वह जीवन में समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता, उन्हीं तरीकों से वह उन विशिष्टताओं को प्राप्त नहीं कर सकता, जिसके माध्यम से जीवन में पूर्ण होता है।

दैवी संयोग

मनुष्य की एक सीमा है, उसके सोचने की, उसके विचारने की, आगे बढ़ने की, कार्य करने की और जीवन में बहुत कुछ प्राप्त करने की। अपनी सीमा से आगे वह चाहते हुए भी नहीं बढ़ सकता, पर यदि मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंचना चाहता है, हिमालय की उच्चता को छूना चाहता है, काल के भाल पर अपने अंगूठे से तिलक करना चाहता है, और अपना कद इतना ऊंचा करना चाहता है कि जिसे पूरा विश्व देख सके, तो इसके लिए यह आवश्यक है, कि वह दैवी सहायता प्राप्त करे, उसके साथ शक्ति की सामर्थ्यता हो, उसके पास सिद्धि हो, उसके पास मन्त्र बल हो, और उसके पास कुछ विशिष्टता हो।

पर यह कुछ विशिष्टता आम साधक के द्वारा संभव नहीं है, यह विशेषता प्राप्त करना उन सड़ी गली

मान्यताओं के द्वारा भी संभव नहीं है, इस ऊंचाई और पूर्णता को प्राप्त करने के लिए वे परम्परागत साधन काम नहीं आ सकते, जो हमारे पूर्वजों के द्वारा अपनाये गये थे, गौमुखी में हाथ डाल कर बगुले की तरह आंखें बन्द कर मन्त्र जप करने से भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, हरिद्वार और काशी में भटकने से भगवान शिव प्रत्यक्ष नहीं हो सकते, और रोज घंटा-घड़ियाल बजाने से या घी की आरती कर देने से लक्ष्मी सामने स्पष्ट नहीं हो जाती, क्योंकि आज के युग में उन परम्पराओं के माध्यम से सफलता प्राप्त नहीं हो सकती, आर्यों के समय के शस्त्रों से आज के युग का युद्ध नहीं जीता जा सकता, इसके लिए नये अस्त्र चाहिए, इसके लिए नई टेकनिक चाहिए, इसके लिए नये तरीके अपनाने आवश्यक हो गये हैं।

नवीन साधक का निर्माण

और इसीलिए मैं कहता हूं कि इसके लिए पुराने साधक की परम्परा से काम नहीं चल सकता, एक नया साधक बनाने की जरूरत है, एक नये प्रकार की विचार पद्धति देने की आवश्यकता है, एक नये प्रकार का क्रिया-कलाप सम्पन्न करने की जरूरत है. और ऐसा होने पर ही वह इस देश में, इस विश्व में तेजी के साथ आगे बढ़ सकता है, और इस सड़ी गली मान्यताओं के कीचड़ पर कमल की तरह खिल कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

और जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक वह चारों तरफ भटकता ही रहेगा, क्योंकि जीवन की पूर्णता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह हर हालत मे साधक बने, जीवन की सम्पन्नता के लिए यह जरूरी है कि वह हर हालत में दैवी सहायता प्राप्त करे. जीवन की सफलता के लिए यह जरूरी है कि देवताओं की आराधना कर शक्ति प्राप्त करे और उसके माध्यम से अपने अभाव, अपनी समस्याएं; अपने कष्ट और अपनी बाधाओं को दूर करे और जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करे।

गुरु ही एक मात्र आधार

ऋग्वेद के प्रारम्भिक श्लोक से लगा कर आज तक जितने भी साधनात्मक और मंत्र तंत्र से संबंधित ग्रन्थ लिखे गये हैं, उनमें एक ही बात स्पष्ट रूप से बतायी गई हैं कि पत्थरों की पूजा करने की अपेक्षा जीवित देवता के चरणों में बैठ कर सीखने की ज्यादा जरूरत है, पत्थरों पर जल चढ़ाने और पुष्पों से शृंगार करने की अपेक्षा जीवित जाग्रत चैतन्य गुरु के पास बैठ कर उनसे सीखने की आवश्यकता ज्यादा है, रेगिस्तान में आंखें बन्द कर बैठने की अपेक्षा वसंत की सुगन्ध के बीच बैठना जरूरी है कि वह अपनी बुद्धि से नहीं अपितु अपने हृदय को उस जीवित जाग्रत गुरु की सुगन्ध से अपने आपको आप्लावित कर दे, अपने आपको उनकी कृपा की फुहार से भिगो दे, और अपने आपको पूरी तरह से उनमें लीन कर दे।

गुरु केवल हाड़-मांस से निर्मित शरीर ही नहीं है, कि वह गुरु को पहिचान सके, शिष्य में वह सामर्थ्य है ही नहीं कि वह गुरु से परिचित हो सके, वह तो केवल उनके पास बैठ सकता है, वह तो केवल उनकी सुगन्ध से अपने आपको भर सकता है, वह तो केवल उनकी वाणी से अपने पोर-पोर को भिगो सकता है, और शिष्य के लिए इतना ही बहुत है।

क्योंकि यदि इतना ही होगा, तो वह अपने आपमें उस सड़ी गली मान्यताओं के विपरीत अपनी आवाज उठाने में सक्षम समर्थ होगा, वह पहली बार यह धारणा स्पष्ट करेगा कि मन्त्र जप की अपेक्षा, गुरु के पास बैठना ज्यादा जरूरी है, किसी भी खेजड़ी की लकड़ी को यह सिखाया नहीं जाता कि वह मन्त्र जप करे, मन्त्र जप करने

से खेजड़ी की लकड़ी चंदन की तरह सुगन्धित नहीं हो जाती, इसके लिए उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं है, चुपचाप संगति करने की जरूरत है, चुपचाप चंदन के पास बैठने की जरूरत है, चुपचाप चंदन से रगड़ खाने की जरूरत है।

और यदि उस बेकार सी खेजड़ी की लकड़ी ने अगर इतना ही कर लिया तो वह अपनी कुल की मान्यताओं के विपरीत एक चंदन की लकड़ी बन कर दिखा देगी, वह दिखा देगी कि उसमें भी सुगन्ध है, वह दिखा देगी कि वह सैकड़ों-सैकड़ों लोगों को सुगन्ध से आप्लावित कर सकती है, वह दिखा देगी कि वह खुद मूल्यवान लकड़ी बन सकती है।

ठीक इसी प्रकार नये साधक को गुरु के पास बैठना है, उनकी देह से, उनके प्राणों से, उनके चिन्तन से और उनकी भावनाओं से अपने आपको अभिभूत करना है, अपने आपको पूरी तरह से मिटा देना है, गुरु में अपने आपको पूर्ण रूप से विसर्जित कर देना है।

पर यह विसर्जन पढ़ने में और देखने में जितना सरल प्रतीत होता है, उतना सरल नहीं है, इसके लिए अपने अहं को गलाना होगा, अपने "स्व" को समाप्त करना होगा, अपने आपको पूरी तरह से समर्पित करना होगा, अपने हाथ में सेवा का आधार लिये, उनके सामने उपस्थित होना होगा और गुरु जो भी आज्ञा दें उसके अनुसार निर्मल भावनाओं के साथ अपने जीवन को ढालना होगा।

और जब ऐसा होगा तब पुरानी मान्यताओं, पुरानी सड़ी गली व्यवस्थाओं के बीच एक नये प्रकार का साधक तैयार करना होगा, जो गंगा में स्नान करने से पवित्र नहीं होता, जो पाखण्डियों और पण्डितों के चक्कर में समय बरबाद नहीं करता, जो आंखें बन्द कर घण्टों बैठा नहीं रहता, जो घी का दीप जला कर गिड़गिड़ाता नहीं, अपितु जो दम खम के साथ खड़े होने की सामर्थ्य रखता है, जिसमें चेतना है, प्रवाह है, आगे बढ़ने की क्षमता है, क्योंकि उसका निर्माण गुरु के माध्यम से हुआ है, क्योंकि उसकी चेतना का प्रवाह गुरु के द्वारा प्राप्त हुआ है, क्योंकि उसके जीवन का दिशा निर्धारण गुरु के द्वारा हुआ है।

और गुरु का तात्पर्य है **"पूर्णता"**, गुरु का तात्पर्य है **"सिद्धि"**, गुरु का तात्पर्य है **"तंत्रमयता"**, और गुरु का तात्पर्य है **"सर्वोच्चता"**।

गुरु तो सही अर्थों में उज्ज्वल और निर्मल मानसरोवर है जिसमें डुबकी लगाने से कौआ भी हंस बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, गुरु तो वह पर्वत शिखर है, जहां पहुंचने से मामूली तिनका भी सही अर्थों में पूर्ण "शिव" बन जाता है, गुरु तो वह सम्पूर्णता है जिसमें अवगाहन करने से समस्त सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं।

बीसवीं शताब्दी की यह अन्तिम दशाब्दी का प्रारम्भिक वर्ष है, और जरूरत है अपने आप को समझने की, जरूरत है सही तरीके से अपना निर्माण करने की, और जरूरत है इस घिनौने और घटिया समाज रूपी कीचड़ में से बाहर निकलने की।

गुरु तुम्हारा निर्माण करने के लिए तैयार है, तुम्हें एक नये प्रकार से विश्व के रंग मंच पर खड़ा करने के लिए उद्यत है, तुम्हें पूर्णता देने के लिए आवाज दे रहा है, और समस्त सिद्धियों को तुम्हें प्रदान करने के लिए निमन्त्रित कर रहा है, जरूरत है आगे बढ़ने की, जरूरत है तेजी के साथ उनमें मिल जाने की, और जरूरत है अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देने की, तभी नये साधक का, नये मनुष्य का नयी विधि से निर्माण हो सकेगा।*

सात अद्वितीय टोटके
जो अपने आप में अचूक हैं

मंत्र तथा तंत्र का संसार अत्यन्त विशाल तथा साधारण साधक के लिए विचित्र ही है, इस ससार में रहस्यों को जानने का जितना प्रयास करते हैं, उतनी ही नई-नई जानकारी मिलती है. कई कार्य जो बड़ी-बड़ी साधनाओं से सम्पन्न नहीं हो पाते, वे छोटे-छोटे कुछ विशेष टोटकों से ही सिद्ध हो जाते हैं।

ऐसी ही एक पुस्तक से दिये गये कुछ अचूक फलदायक प्रयोग पत्रिका पाठकों के लिए दिये जा रहे हैं, स्वयं प्रयोग कर इनकी विशेषताएं जान सकेंगे।

१- आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

बुधवार की रात्रि को ९ बजे उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें अपने सामने **"सियार सिंगी"** सिन्दूर में भर कर एक मिट्टी के पात्र में रख दें और उस पात्र को लाल कपड़े में बांध दें, अब शंख माला से निम्नलिखित मन्त्र की २१ माला का जप तीन दिन में सम्पन्न करें, और जब तीन दिन पूरे हो जांय तो उस सियार सिंगी को एक अलग डिब्बी में अपने कार्य स्थल पर अथवा व्यापार स्थल पर रख दें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वर्णावती ममगृहे
आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ नमः ।।

२- स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

जब घर में खर्च बहुत अधिक बढ़ रहा हो, आय तो होती हो, लेकिन व्यय के कारण कर्ज की स्थिति बनने लगे तो मन्त्र सिद्ध **"मोती शंख"** एक पीले वस्त्र में चावल के दानों के साथ बांध कर घर में तिजोरी अथवा जहां भी रुपये पैसे रखते हैं, वहां रख दें इससे लक्ष्मी में स्थिरता आती है और धन का अपव्यय होने से बचता है।

३- शत्रु स्तम्भन प्रयोग

एक से अधिक शत्रु हों और शत्रुओं के कारण हर समय चिन्ता रहती हो तो मिट्टी के बर्तन में शनिवार को श्मशान से भस्म लाकर उस मिट्टी के बर्तन में रख दें, उसके मध्य में एक **"तांत्रोक्त नारियल"** नीले डोरे में लपेट कर रखें, पात्र में एक कागज पर शत्रु का नाम लिख दें और बर्तन का मुंह बन्द कर कम से कम दो फुट गहरा गड्ढा खोद कर गाड़ दें और उसके ऊपर भारी पत्थर रख दें, इससे प्रबल से प्रबल शत्रु भी शान्त हो जाता है।

४- सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

किसी भी कार्य को सफलता जीवन में आवश्यक है, फिर वह चाहे किसी व्यापारिक उद्देश्य से कहीं जावें या किसी से मिलने के लिए उनसे काम निकलवाने के लिए जाएं, आपके मन की बात पूरी अवश्य होनी चाहिए, तभी तो कार्य करने का मजा है, सामने वाला प्रभावित होकर आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करे, इसलिए कार्य हेतु घर से रवाना होते समय एक **"सिद्धिचक्र"** अपनी जेब में अथवा बैग में रख लें, और जहां जाना हो, उस स्थान पर पहुंचने से थोड़ी देर पहले वह सिद्धि चक्र उस ओर फेंक दें, इससे निश्चय ही उस कार्य में सफलता मिलती है।

५- शारीरिक कमजोरी मिटाने का प्रयोग

शारीरिक दृष्टि से जब विशेष कमजोरी, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहे, जिस प्रकार से स्वास्थ्य रहना चाहिए उस प्रकार से नहीं रहे, गृहस्थ जीवन में आनन्द न आये तो यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

सोमवार को सुबह **"स्फटिक शिवलिंग"** के ऊपर दूध की धारा चढ़ाएं तथा "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र बोलते रहें. रात्रि को भी यही प्रयोग करें तथा चढ़ाये गये दूध को स्वयं ग्रहण कर लें, यह स्फटिक शिवलिंग अपने भुजा पर बांध कर अथवा जेब में रख कर सोवें तो इससे किसी भी प्रकार की कमजोरी दूर हो जाती है।

६- सम्मोहन प्रयोग

इस पुस्तक में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग बताया है और इसको जितनी बार भी आजमाया है, उतनी ही बार वह पूर्ण सफल रहा है, जिसको आप वश में करना चाहें या जिस पर आप सम्मोहित प्रयोग करना चाहें, शुक्रवार की रात्रि को एक **"घुंघचुओं की माला"** पर उस व्यक्ति या स्त्री का नाम ले कर यह भावना मन में लावें, कि यह मेरे वश में रहे और पूर्ण रूप से मेरे प्रति सम्मोहित रहे, मैं जो भी कहूं उस कार्य को अवश्य ही करे।

ऐसा कहते हुए उसका नाम ले कर १०८ बार उस माला पर हाथ फेरें और वह फिर माला रात्रि में ही दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें तो दूसरे ही दिन से वह स्त्री या पुरुष पूर्ण रूप से सम्मोहित और वश में होता है तथा उसे जो भी आज्ञा दी जाती है, उसका पालन करता है, यह अनुकूल और सफल प्रयोग है।

७- कर्जा वसूल करने का प्रयोग

यदि किसी को धन राशि दी हुई है, और वापिस वसूल नहीं हो रही है या वह आनाकानी कर रहा है अथवा व्यवधान पैदा कर रहा है तो इसका एक सफल प्रयोग इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

रविवार को ठीक दोपहर में अर्थात् १२ बजे से १ बजे के बीच **"हिरण बीज"** लेकर उसे जमीन पर रख दें, और उसके चारों ओर काजल का घेरा बना दें, फिर १०८ बार यह उच्चारण करें कि यह व्यक्ति मुझे एक सप्ताह के भीतर-भीतर मेरा कर्ज लौटा दे और फिर जमीन पर रखे हुए वे तीन बीज कहीं पर भी जमीन में गाड़ दें तो इसका आश्चर्यजनक प्रभाव होता है और वह स्वयं एक सप्ताह के भीतर-भीतर आकर रकम लौटा देता है। ●

विनम्र निवेदन

जिन पत्रिका सदस्यो ने वर्ष ९१ के लिए नवीनीकरण करा लिया है, उन सदस्यों को जनवरी का **"साधना-उपासना विशेषांक"** तथा फरवरी अंक भेजा जा चुका है।

इस संबंध में यदि नवीनीकरण शुल्क आपने भेज दिया है और आपको पत्रिका प्राप्त नहीं हुई है, तो पूरे विवरण के साथ तत्काल पत्र अवश्य लिखें।

जिन सदस्यों ने अभी तक अपना नवीनीकरण किसी कारणवश नहीं कराया है, तो वे कार्यालय को पत्र द्वारा सूचित अवश्य कर दें जिससे उनकी सदस्य संख्या को रद्द किया जा सके।

हर महीने की १२ तारीख को पत्रिका अंक भेज दिया जाता है, यदि उस महीने के अन्त तक भी पत्रिका किसी कारणवश आपको प्राप्त न हो, तो तत्काल सूचित करें जिससे आवश्यक कार्यवाही की जा सके। अपने पत्र में सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

चैतन्य निखिल ज्योति रथ

आपके सौभाग्य के द्वार को खटखटा रहा है

निखिल ज्योति (**गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी से अनुप्राणित**) से संबंधित **"चैतन्य रथ"** भारत भ्रमण पर है, पिछले दिनों उसने नेपाल की यात्रा सम्पन्न की है, इस रथ के साथ-साथ पूज्य गुरुदेव स्वयं साधक के घर पदार्पण करते हैं, जिसके फलस्वरूप साधक का घर पवित्र, दिव्य और चैतन्य हो उठता है।

अप्रैल में यह **चैतन्य रथ** उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों को स्पर्श करता हुआ **हिमाचल प्रदेश** में संचालित होगा, कार्यक्रम के अनुसार २५ अप्रैल को **'गाजियाबाद'**, २६ को **'मेरठ'**, २८ को **'सामली'**, २९ को **'बिजनौर'**, तथा ३० अप्रैल को **'मुजफ्फरनगर'** पहुँचेगा।

इसी प्रकार २ मई को **'रुड़की'**, ३ को **'सहारनपुर'**, ५ को **'देहरादून'**, ६ को **'नाहन'** (**श्री कृष्णदत्त शर्मा**), ७ मई को **'सोलन'** (**श्री राम स्वरूप शर्मा, श्री कृष्णदत्त शर्मा**), ८ को **'शिमला'** (**श्री रामसिंह शास्त्री**), ९ को **'बिलासपुर'** (**नन्दलाल शर्मा**), १० को **'सुन्दर नगर'** (**श्री सुरेश कुमार, श्री जय कुमार**), ११ को **'मण्डी'** (**श्री रतनलाल राव**), १२ को **'पण्डोह'** (**श्री एम० आर० वशिष्ठ**), १४ को **'कुल्लू'** (**श्री नारायण सिंह ठाकुर**) के यहां पहुँचेगा।

१७-१८-१९ मई को हिमाचल प्रदेश के अत्यन्त सुरम्य और पवित्र स्थान **"धर्मशाला"** में महत्व पूर्ण शिविर सम्पन्न होगा, जिसमें पूज्य गुरुदेव उपस्थित होंगे।

ऊपर जिन शहरों का विवरण आया है, उस शहर के और उसके आस-पास के गांवों या शहरों में यदि **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** के सदस्य अथवा पूज्य गुरुदेव के शिष्य रहते हैं और यदि वे अपने घर पर चैतन्य रथ को निमन्त्रित करना चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर या इसकी प्रतिलिपि बना कर हमें भेज दें, जिससे कि कार्यक्रम में आपका नाम सम्मिलित किया जा सके, आपके घर पर गुरुदेव पधार सकें, शाम को भजन कीर्तन हो सके और सारे गुरु भाई मिल कर प्रीतिभोज का आनन्द ले सकें।

अपने घर पर चैतन्य रथ को बुलाने के लिए किसी प्रकार का व्यय करने की जरूरत नहीं है, नियमों के अनुसार जो भी सदस्य अपने गांव या घर पर चैतन्य रथ को आमन्त्रित करना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है, कि जब दिव्य चैतन्य रथ आपके द्वार पर पहुंचे तब आप संयोजक-संचालक को वर्ष १९९१ के ग्यारह नये पत्रिका सदस्य बना कर उसकी सूची और संबंधित धनराशि जमा करवा दें।

पर इससे पूर्व नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर या इसकी प्रतिलिपि बना कर जोधपुर पत्रिका कार्यालय को भेजना अत्यन्त आवश्यक है जिससे कि कार्यक्रम को अन्तिम रूप देते समय आपका नाम भी शामिल किया जा सके, यह प्रपत्र २८ फरवरी तक जोधपुर पहुंच जाना

चाहिए । इस पूरे यात्रा कार्यक्रम के संयोजक—श्री एम० आर० वशिष्ठ हैं, उनका पता है—

डॉ० एम० आर० वशिष्ठ
पी-२/६२२, पण्डोह, जेल कालोनी,
मन्डी (हिमाचल प्रदेश)

गुजरात

इसी प्रकार गुजरात में भी चैतन्य रथ का कार्यक्रम बना है, जिसके संयोजक प्रवीण जोशी हैं, उनका पता है—

श्री प्रवीण जोशी
सी-३, कस्तूरी नगर सोसायटी
श्रीयस स्कूल के पीछे, मंजालपुर नाका,
बड़ौदा (गुजरात)

उनके अनुसार २५ मार्च १९९१ को रथ **'पालनपुर'** पहुँचेगा, २६ को **'महसाना'**, २७-२८ मार्च को **'सुरेन्द्र नगर'**, ३० को **'राजकोट'** रथ पहुंचेगा ।

इसी प्रकार १ अप्रैल को यह चैतन्य रथ **'गांधीनगर'** २-३ अप्रैल को **'अहमदाबाद'**, ५-६ अप्रैल **'बड़ौदा'** और **'नडियाद'**, ७-८ अप्रैल को **'सूरत'** तथा ९ अप्रैल को **'बलसाड़'** पहुंचेगा ।

१० अप्रैल को **'वापी'** और **'संजान'** होते हुए यह रथ **'नारगोल'** जायेगा, १२-१३-१४ अप्रैल १९९१ को **'नारगोल'** में भव्य शिविर का आयोजन रखा गया है, जिसके संयोजक **'प्रवीण जोशी'** हैं ।

इस सम्बन्ध में जिन शहरों का जिक्र ऊपर आया है उन शहरों में रहने वाले साधक या उसके आस-पास रहने वाले शिष्य यदि पूज्य गुरुदेव युक्त इस चैतन्य रथ को अपने घर पर आमन्त्रित करना चाहते हैं, तो वे नीचे दिये हुए प्रपत्र की प्रतिलिपि बना कर जोधपुर भिजवा दें, जिससे कि उनका नाम इस कार्य क्रम में शामिल किया जा सके ।

संबंधित किसी भी प्रकार की सूचना या जानकारी आप संबंधित संयोजक से प्राप्त कर अपने कार्यक्रम को अंतिम रूप दे सकते हैं ।

'चैतन्य दिव्य ज्योति सौभाग्य रथ' आमंत्रण प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य इस महान **"निखिलेश्वरानंद चैतन्य दिव्य ज्योति सौभाग्य रथ"** की अपने द्वार पर विधिवत अगवानी कर अपने यहां विधिवत पूजन सम्पन्न कराना चाहता हूं, इस हेतु मेरे यहां पूजन कार्य, गुरु पूजन सम्पन्न किया जाय, और मेरा आतिथ्य आमन्त्रण स्वीकार कर मुझे सौभाग्य ध्वज प्रदान करें ।

मैं ग्यारह सदस्यों के नाम एवं शुल्क पूजन के समय ही कार्यक्रम संयोजक संचालक को सौंप दूंगा ।

मेरी पत्रिका सदस्य संख्या...

मेरा पूरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

हस्ताक्षर..............................

आइये

अदृश्य अशरीरी शक्ति को वश में करें

और

बाधाएं समाप्त करें भूत वर्तमान भविष्य की

और

दास बना दीजिए किसी भी शत्रु को

साधना का तात्पर्य है अपने भीतर सिद्धि, शक्ति उत्पन्न करना, जब बाहरी बाधाएं कम हो जाती हैं अथवा पूर्ण रूप से दूर हो जाती हैं, तभी तो व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है, अपनी शक्ति का सही उपयोग कर साधारण स्थिति से श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकता है।

बाधाएं निमंत्रण दे कर नहीं आती हैं, बाधाएं तो अकस्मात सामने आ जाती हैं, यदि शत्रु प्रबल हो जांय तो किस समय हानि पहुँचा दें इसका अनुमान लगाना कठिन है, हर समय शंका कुशंका से ग्रस्त रहता है, जीवन साधारण बन कर रह जाता है, इसीलिए तो साधना की जाती है जिससे शक्ति का उद्भव हो सके, शक्ति के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा, उसके प्रवाह को रोक देती है, और जब यह शक्ति प्रवाह रुक जाता है तो साधक को भीतर ही भीतर नष्ट करने लगता है, इसलिए हर स्थिति में बाधाओं का निराकरण आवश्यक है और जब ये बाधाएं आपकी जानकारी में हों, अर्थात् आपको मालूम हो कि अमुक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह आपके विरुद्ध कार्य कर रहा है, आप अपने मार्ग पर बढ़ रहे हैं, लेकिन इस युग में तो किसी को भी दूसरों की उन्नति सुहाती नहीं है, और वे आपके विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं, कई बार तो आप जिन्हें अपना मित्र तथा शुभचिन्तक समझते हैं, वे ही आपको हानि पहुंचाने में सबसे आगे रहते हैं।

जीवन में अक्सर धोखे होते रहते हैं, लेकिन यदि आप को मालूम है कि अमुक आपका शत्रु है, तो फिर उसका उपाय क्यों नहीं किया जाय, शत्रु की शक्ति को ही क्यों न

इतना क्षीण बना दिया जाय कि वह आपके विरुद्ध कार्य ही न कर सके, यही तो साधना है, सिद्धि का मार्ग है, साधना सिद्धि का तात्पर्य यह नहीं है, कि आप घर की छत पर बैठ गये और स्वर्ण वर्षा होने लगे, साधना का तो तात्पर्य है कि आपके कार्य के मार्ग में कठिनाई नहीं हो, आत्म शक्ति, इच्छा शक्ति, कार्य शक्ति, तीव्रतम रूप से जाग्रत हो, जो कार्य करें, वह सहज पूरा हो जाय और आपको अपना लक्ष्य मिल जाय।

अद्भुत तांत्रिक वार्ताली साधना

वार्ताली साधना, शिव साधना का एक प्रमुख भाग है, आदि देव शिव की यह विशेष शक्ति-शत्रु हन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन की शक्ति है, जब शत्रु अत्यन्त प्रबल हो जांय और सामान्य प्रभाव से वश में न आएं तो तंत्र शास्त्र की इस प्रमुख साधना का प्रयोग करना चाहिए।

इस साधना का प्रयोग निम्न कार्यों के लिए भी किया जा सकता है—

- जब व्यापार में निरन्तर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयास करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों।
- जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें और किसी भी प्रकार का कार्य हर दृष्टि से रुक जाय, यह बाधा किसी भी प्रकार की हो सकती है।
- जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों, और आपको तंग करने का प्रयास करते ही रहें।
- जब किसी कार्य द्वारा मान हानि, अपयश की आशंका हो।
- किसी मुकदमे में हार की संभावना हो, और मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो।
- जब मानसिक अशान्ति बढ़ जाय और आगे बढ़ने का कई मार्ग न मिले।
- जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाने लगें।
- घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगें और घर में हर समय कलह, रोग का वातावरण रहने लगे।
- घर पर भूत-प्रेत-पिशाच का डर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगें।

इन सब विपरीत स्थितियों के निराकरण हेतु वार्ताली साधना ऐसी तीव्र, अचूक, शक्ति प्रदायक, तुरन्त फल प्रदायक साधना है, जो प्रबल से प्रबल शत्रु को भी आपके वश में कर देती है।

साधना कब करें ?

यह साधना मूल रूप से तो कृष्ण पक्ष में ही सम्पन्न की जाती है, तथा यह रात्रि साधना है, सर्वोत्तम समय कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि है, साधना के समय किसी प्रकार का विघ्न न हो, आप अपने पूर्ण मनोयोग से फल प्राप्ति की, शक्ति प्राप्ति की इच्छा के साथ ही साधना सम्पन्न करें, साधना में भावना का भी स्थान प्रबल है, दृढ़ भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति होनी ही चाहिए।

साधना प्रयोग

इस साधना हेतु कुछ विशेष कार्यों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप कार्य होना चाहिए, साधना काल में जो-जो वस्तुएं आवश्यक हैं, उन वस्तुओं की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, साधना काल में बीच में उठना एक प्रकार से साधना में विघ्न है।

एक समय में एक विशेष कामना, इच्छा पूर्ति, अथवा एक विशेष कार्य हेतु ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना प्रारम्भ करने से पहले जो कार्य पूर्ण करना चाहते हैं, उस काय का संकल्प अवश्य लेना चाहिए, भिन्न-भिन्न लक्ष्यों की पूर्ति का एक साथ प्रयास करने से एक भी लक्ष्य पूरा नहीं होता, यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री में—घी, दूध, ताम्र पात्र में जल, रक्त चन्दन, अगरबत्ती, केसर, चन्दन, सुगन्धित पुष्प, के अतिरिक्त ताम्र पत्र पर अंकित प्राण प्रतिष्ठायुक्त **'वार्ताली पूजन यन्त्र'** तथा **'वार्ताली स्तंभन यंत्र'** आवश्यक है।

इन सभी सामग्रियों का उपयोग कैसे किया जाय, यह आगे स्पष्ट किया जा रहा है।

वार्ताली साधना प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् १० बजे के बाद स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर ऊनी आसन पर स्थान ग्रहण करें, एक थाली में सभी सामग्री अपने पास रख दें।

सर्व प्रथम अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर, लाल वस्त्र बिछाकर घी का दीपक जला कर गुरु पूजन कर, साधना की मानसिक आज्ञा प्राप्त कर, अपने इष्ट देव का पूजन करें तथा शिव का पूजन प्रारम्भ करें, जब यह कार्य पूर्ण हो जाय तो अपने मन को स्थिर कर साधना की ओर अग्रसर हों।

सर्वप्रथम अपने सामने वार्ताली पूजन यन्त्र को घी से एक अलग थाली में अच्छी तरह लेप कर उसके उपरान्त दूध और जल की धारा से धोकर स्वच्छ जल से पोंछ कर पीठ के मध्य में चावलों की ढेरी बना कर उस पर पुष्प की एक पंखुड़ी रखें उसके पश्चात् निम्न मंत्र बोलते हुए यन्त्र को उस पंखुड़ी पर स्थापित करें—

ॐ ग्लौं वार्तालिय कैलाशाचल मध्य स्थितितायै नमः।

तत्पश्चात् यन्त्र पर रक्त चन्दन, हल्दी, अगर, केसर, चढ़ाएं।

वार्ताली स्तम्भन यन्त्र
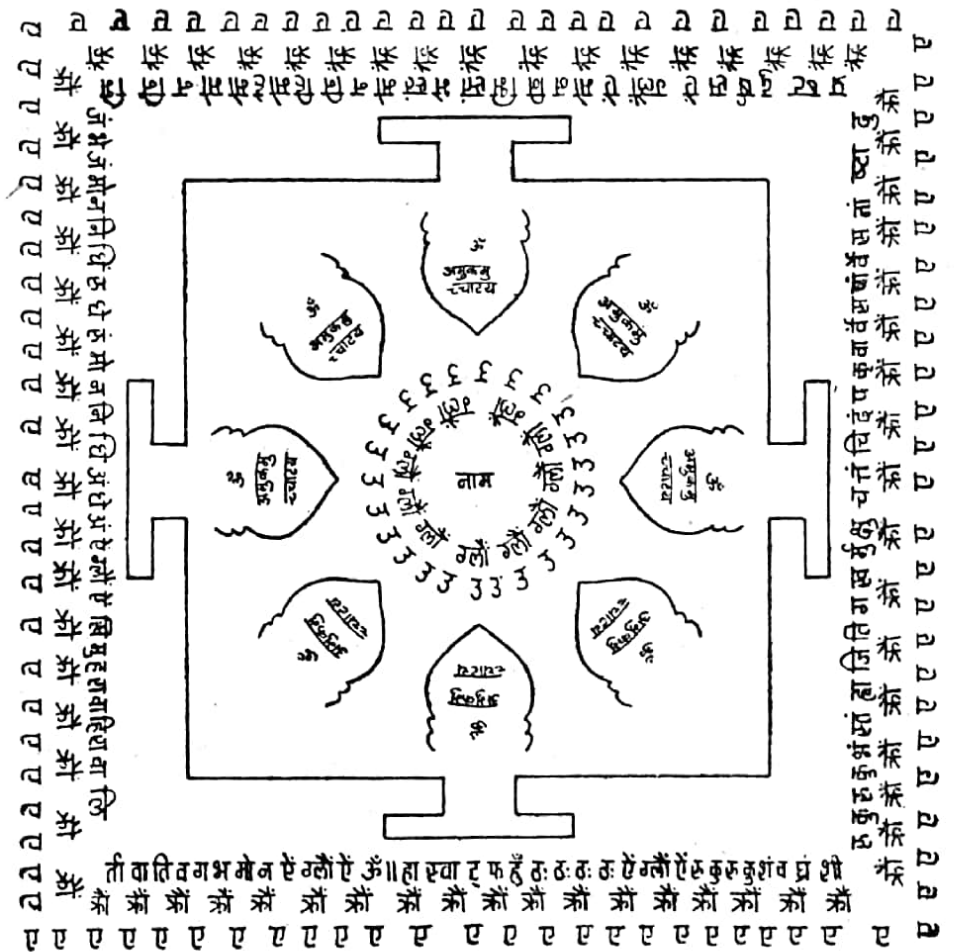
अब वार्तालि देवी का ध्यान करें— रक्तवर्णीय, त्रिनेत्री, सिंह पर स्थित, शत्रुओं में प्रबल भय देने वाली, साधक के हृदय में स्थित होने वाली, मुण्ड माला धारण किये हुए वार्तालि देवी का मैं ध्यान करता हूं, मेरी कामना पूर्ण करें।

इसके पश्चात् क्रमानुसार सामने नौ पीठ शक्तियों— जया, विजया, जिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्धी, अघोरी तथा मंगला की स्थापना पूजा करें।

अब स्तंभन संबंधी साधना हेतु एक कागज पर हल्दी से चित्र में दिया हुआ वार्तालि स्तंभन यन्त्र बना कर अपने दायीं ओर रखें और उसके आगे तेल का दीपक जलाएं, इसके बाद सिंदूर द्वारा पूजन करें तथा अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर चढ़ाएं तथा दाएं हाथ में जल ले कर संकल्प कर अपनी जो विशेष इच्छा हो वह जोर से बोल कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

अब दीपक को अपने हाथ में ले कर वार्तालि पूजन यंत्र के सामने आरती के रूप में घुमाते हुए निम्नलिखित वार्तालि मंत्र को ग्यारह बार बोलें।

वार्तालि मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं वार्तालि क्रीं क्रीं फट् ।।

इसके पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को थोड़ा चरणामृत रूप में स्वयं ग्रहण करें।

वार्तालि स्तंभन यन्त्र की गणेश तथा क्षेत्रपाल, भैरव पूजन के पश्चात् गणेश के सामने प्रसाद रखें, भैरव के भी सामने प्रसाद रखें तथा हाथ धो कर वार्तालि देवी का ध्यान करते हुए वार्तालि स्तंभन मंत्र का जप करें।

वार्तालि कार्य सिद्धि मंत्र

।। ॐ क्रों वाराह्य वार्तालीय नमः ।।

इस मन्त्र की ग्यारह माला जप उसी स्थान पर बैठ कर करना है, कामना पूर्ति हेतु पुष्प, तिल, तथा सुरा अर्पित करनी चाहिए।

इस साधना में कुछ विशेष बातें हैं—शत्रु स्तम्भन कार्य हेतु मन्त्र जप **'हरिद्रा माला'** से करना चाहिए।

शुभ कार्य हेतु **'स्फटिक माला'** से मंत्र जप करना चाहिए।

किसी कार्य की विजय सिद्धि हेतु **'रुद्राक्ष माला'** से मंत्र जप करना चाहिए।

पूजन समाप्त होने पर पुनः क्रमशः गुरु, शिव, गणेश, भैरव, वार्तालि का ध्यान कर अपना स्थान छोड़ना चाहिए।

वार्तालि स्तंभन यन्त्र लिखे कागज के नीचे अपने विरोधी का नाम अवश्य लिखा होना चाहिए, इस कागज को एक मिट्टी के पात्र में गुग्गल, तिल, सरसों तथा पुष्प डाल कर जला देने से प्रबल से प्रबल शत्रु का भी नाश हो जाता है।

पूजन के पश्चात् वार्तालि यन्त्र को अपने पूजा स्थान में एक ओर स्थापित कर दें तथा जब भी किसी प्रकार की शत्रु बाधा, अथवा कोई अन्य बाधा आये तो अमावस्या को पूजन अवश्य करना चाहिए।

मैं देखता हूं

कैसे पूरी नहीं होती है मनोवांछित कामना इस दुर्लभ प्रयोग से

कामनाएं करने वाला और उनकी पूर्ति के लिए प्रयास करने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है, कामनाएं अनन्त हो सकती हैं, सब कामनाएं साथ-साथ तो नहीं चलतीं, लेकिन उनकी पूर्ति के लिए समन्वित प्रयास कर कामनाएं एक के बाद एक पूरी की जा सकती हैं।

कामना चाहे अपने लिए हो अथवा दूसरों के लिए, इसका निश्चय साधक को स्वयं ही करना पड़ता है, और जिस प्रकार की भावना के साथ अनुष्ठान सम्पन्न करता है, उसी रीति से फल प्राप्ति होती है। कामना किसी भी प्रकार की हो सकती है, चाहे वह तन से संबंधित हो, चाहे स्वास्थ्य से संबंधित, संतान से संबंधित हो अथवा किसी कार्य विशेष के फल से संबंधित, यह कामना आधार है, उस कार्य को प्रारम्भ करने का, और यदि उस कार्य का श्रेष्ठ फल प्राप्त हो जाता है तो उत्साह सौ गुना बढ़ जाता है।

कामदा एकादशी

कामदा एकादशी एक पर्व है, त्यौहार है, अनुष्ठान का दिन है, कुछ प्राप्त करने का प्रयोग दिवस है, इस दिन साधक यदि कोई प्रयोग विधि-विधान सहित पूर्ण रूप से सम्पन्न करता है, तो उसकी कामना निश्चय ही पूर्ण होती है।

यह तो कामधेनु चतुस्र देवियों के सिद्धि का दिवस है, कामधेनु चतुस्र देवियां हैं–अमृता पीठेशी, सुधाश्री, अमृतेश्वरी, तथा अन्नपूर्णा, इस प्रयोग दिवस के दिन प्रत्येक की पूजा का अलग-अलग विधान दिया गया है।

योगचूड़ामणि उपनिषद

इस महाग्रन्थ में लिखा गया है कि जो अपने भूत एवं भविष्य को अपनी ज्ञान और विद्या से, अपने कर्म एवं

मंत्र जप से शुद्ध करना चाहता है, जो अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए अथक प्रयास की पूर्णता चाहता है, तो उसे कामधेनु चतुत्र देवियों की पूजा कामदा एकादशी के दिन पूर्ण निष्ठा से अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

कामनाओं की पूर्ति का तात्पर्य है–जीवन में अमृत, सुधा, श्री और पूर्णता का निवास होना और इसीलिए इस विशेष दिवस को इन देवियों का आह्वान कर स्थिर कर लेना चाहिए, इनकी स्थिरता किसी भी कामना को पूर्ण कर सकती है।

विशेष नियम

इस साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिसे साधक पूर्ण रूप से अवश्य निभाएं।

– इस दिन साधक प्रातः जल्दी उठ कर सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान कर जीवन में कुछ विशेष कार्य को करने की प्रतिज्ञा करें।

– इस दिवस को भोजन ग्रहण न करें, अत्यन्त आवश्यक हो जाय तो दूध अथवा कुछ फल ग्रहण करें।

– यदि साधक गृहस्थ है और उसकी कामना गृहस्थ जीवन से जुड़ी हुई है, तो पति-पत्नी दोनों साथ-साथ पूजन सम्पन्न करें।

– अपनी जो भी विशेष कामना है, इच्छा है, उसे एक कागज पर किसी भी वृक्ष की कलम से अष्ट गंध की स्याही से लिख दें।

– एक समय में एक विशेष कामना पूर्ति हेतु ही साधना अनुष्ठान सम्पन्न करें।

– साधना के समय संकल्प लेना आवश्यक है और जब फल प्राप्ति हो जाय तब जो वचन दिया हुआ है, उसे अवश्य ही पूरा करें।

– यदि प्रेम, वशीकरण, शत्रु बाधा निवारण से संबंधित कोई कामना हो, और उससे संबंधित चित्र हो तो उसे मौली में बांध कर प्रयोग के समय रखें।

– प्रेम संबंधी कामनाओं में चित्र अथवा कागज मौली में लपेटें तथा शत्रु बाधा निवारण प्रयोग में चित्र अथवा कागज काले डोरे में लपेटें।

साधना प्रयोग विधि

इस साधना में प्रातः उठने के पश्चात् गुरु ध्यान कर उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार कर सूर्य के सामने तीन बार अर्घ्य दें और यह प्रार्थना करें कि मैं, आप सूर्य देव को साक्षी रख कर साधना कर रहा हूं, साधना में मुझे कामना पूर्ति प्राप्त हो।

अपने पूजा स्थान के मध्य में एक बड़ा कलश स्थापित करें, कलश के चारों ओर मौली लपेटें, तथा ऊपर मौली लपेट कर नारियल स्थापित करें।

अब घी का दीपक जलाएं तथा दूसरी ओर अगरबत्ती जलाएं, पति-पत्नी साथ बैठने की स्थिति में पत्नी, पति के दायीं ओर बैठे, अब हाथ में जल लेकर अपनी कामना का संकल्प लें तथा जल को भूमि पर छोड़ दें, अपने सामने अपने गुरु का चित्र तथा अपने इष्ट देव का चित्र इत्यादि जो भी हो, स्थापित करें, उनका पूजन पूर्ण करने के पश्चात् साधना का विशेष पूजन प्रारम्भ करें।

पूजन क्रम में **'एक तांत्रोक्त नारियल'**, **'एक तांत्रोक्त फल'**, **'एक मोतीशंख'**, तथा **'एक मधुरूपेण रुद्राक्ष'** आवश्यक है, अपने सामने पूर्व दिशा में अमृत पीठेशी स्वरूप चावल की ढेरी पर तांत्रोक्त नारियल को स्थापित कर पूजन प्रारम्भ करें इस पूजन में सभी सामग्री अबीर गुलाल, कुंकुम, केसर, चन्दन चढ़ाएं।

इसके पश्चात् दक्षिण दिशा में सुधाश्री स्वरूप तांत्रोक्त फल स्थापित करें, तथा इसके सामने केसर युक्त दूध एक कटोरे अथवा लोटे में भर कर प्रसाद रूप रखें, पूजन ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न करना है।

अब पश्चिम दिशा में एक मधुरूपेण रुद्राक्ष स्थापित कर केसर से पूजन करें तथा उस ऋतु में होने वाला फल प्रसाद स्वरूप चढ़ाएं, यदि बिल्व पत्र प्राप्त हो सके तो इसे भी चंदन से भर कर देवी के सामने अर्पित करें, साथ ही दूध से बनी मिठाई नैवेद्य के रूप में चढ़ाएं।

उत्तर दिशा में गेहूं की ढेरी बना कर उस पर मोती शंख स्थापित करें और अन्नपूर्णा देवी का ध्यान करते हुए कुंकुम केसर इत्यदि से पूजन कर घर की कोई विशेष वस्तु देवी के सामने अर्पित करें।

इस प्रकार इन चारों देवियों की स्थापना कर उनके नाम का बीज मंत्र का जप कर पूजन कार्य को पूर्ण करें।

पति-पत्नी दोनों अलग-अलग मंत्र जप करें, चारों देवियों के बीज मंत्र इस प्रकार हैं—

अमृत पोठेशी मंत्र– ऐं क्लीं सौंः

सुधा श्री मंत्र – हुं स्त्रीं स्ह्रीं श्रीं क्लीं

अमृतेश्वरी मंत्र – सौं क्लीं हैं

अन्नपूर्णा मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णा स्वाहा।

प्रत्येक देवी के आगे पुष्प अपने हाथों में भर कर चढ़ाने के पश्चात् मंत्र जप प्रारम्भ करें, कम से कम पांच माला प्रत्येक मन्त्र का जप आवश्यक है और सबसे पहले एक माला गुरु मंत्र का जप करें, इस प्रकार कुल २१ माला जप कर लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करनी चाहिए।

पूजा स्थान में रखा हुआ जल थोड़ा-थोड़ा घर में छिड़कें तथा प्रसाद को परिवार के सदस्य ग्रहण करें जब देवी की कृपा होती है तो घर में सुख-शान्ति, समृद्धि का आगमन तीव्र रूप से होता है।

विशेष बात यह है कि जिस पूजन अनुष्ठान से आपको विशेष लाभ प्राप्त हुआ हो, उस पूजन को कभी भी नहीं भूलना चाहिए।

पूजन के पश्चात् चारों देवियों को, स्थापित की हुई सामग्री अपने घर में ही लाल वस्त्र में बांध कर अलग-अलग दिशाओं में रखें जिससे कि घर में इन देवियों का स्थायी वास हो जाता है।

मनोकामना सिद्धि

शास्त्रों में विधान है कि जो व्यक्ति सात बार इस पूजन क्रम को पूर्ण कर लेता है उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता, और कार्य सिद्धि हेतु जो मनोकामना करता है, वह सभी मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं।

मनोकामनाएं तो आधार हैं जीवन में आगे बढ़ने का, एक मनोकामना की पूर्ति दूसरी मनोकामना को जन्म देती है तो कार्य करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है और जीवन उत्साह का वातावरण भी बनता है, जीवन में उत्साह भाव सदैव बनाए रखें जो दोष हैं, वे दोष अपना विपरीत प्रभाव तो देंगे ही, इसीलिए तो साधना द्वारा इन दोषों का शमन कर, जीवन में मधुरता लानी है। ●

विश्व की तीन दुर्लभ आडियो कैसेट

जिनका कोई मुकाबला ही नहीं है

क्या इन कैसेटों के बिना

आपका जीवन अधूरा सा नहीं है ?

● मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं

इस जीवन से पहले भी आपके जीवन का अस्तित्व था, पर कहां ? कब ? किस प्रकार का ? किस घराने में ? इन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं प्राप्त कर लीजिए, इस साधना विधि से, जो इस कैसेट में गुंथी गई है, एक दुर्लभ कैसेट ।

●● मैं सिद्धाश्रम में स शरीर विचरण कर सकता हूं–

हां ! इसी शरीर से ··· आवश्यकता है उस विधि की, क्रिया की, ध्यान-सरणि की, जिसके माध्यम से यह सब संभव है और इस गोपनीय ज्ञान को संजोया है गुरुदेव ने, इस कैसेट में ···· दुर्लभ अद्वितीय ···· अलौकिक ।

●●● निखिलेश्वरानंद–चिन्तन

परम पूज्य गुरुदेव के सन्यासी जीवन के कुछ गोपनीय अलौकिक प्रसंग, जिसमें गंगा जैसी पवित्रता है तो हिमालय जैसी सर्वोच्चता ···· प्रत्येक शिष्य-साधक के लिए अत्यावश्यक कैसेट ।

प्रत्येक कैसेट का मूल्य - २४) रु०

विश्वास–आप अभी धनराशि न भेजें, केवल आदेश भेज दें, हम वी०पी० से संबंधित कैसेट सुरक्षित रूप से भेज देंगे ।

: सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

अनंग त्रयोदशी–(२७-३-९१)

रूप एवं यौवन

चुराने का क्षण आ गया है

कामदेव-रति प्रयोग से

यह प्रयोग प्राप्त हुआ है "अनंग उपनिषद" से
जो ग्रन्थ अभी तक लुप्त था।

यौवन का तात्पर्य है, ताजगी, जब पुष्प पूरा खिलने से पहले जिस स्वरूप में होता है उस स्वरूप को निहारने का मन बार-बार करता है, उसमें जो बहार होती है, उसे तो देख कर ही आनन्द आ जाता है, और फिर वह पुष्प सुगन्धित हो, तो फिर कहना ही क्या ?

रूप माधुर्य और यौवन की छटा भी ऐसी ही है, रूप गोरेपन में, तीखे-नाक नक्स में और यौवन केवल जवानी की आयु से संबंधित नहीं है, यह तो भीतर उत्पन्न हुए विविध भावों का शरीर के माध्यम से प्रकटीकरण है, जो कितना ही छिपाओ छिप नहीं सकता, जीवन के दिन रुकते नहीं हैं, लेकिन यदि इसमें ताजगी नहीं है, रूप नहीं है, आनन्द नहीं है, माधुर्य नहीं है, प्रेम नहीं है, पीड़ा नहीं है, तो फिर जीवन के दिन काटने के समान है क्योंकि जीवन जीना भी एक अलग ही चीज है और यह प्राप्त की जा सकती है, यह संभव है कि आपका जीवन दूसरों से अलग हो, इसमें प्रातःकाल की शीतलता हो, भीतर ही भीतर तेज हो, वृद्धि के अणु हों, सुगन्ध हो।

अनंग उपनिषद

कामदेव को पुरुष शक्ति का स्वरूप तथा रति को स्त्री शक्ति का स्वरूप माना गया है और इस संबंध में जितने ग्रन्थ, काव्य रचनाएं लिखी गई हैं, उतनी रचनाएं शायद ही किसी अन्य विषय से संबंध में लिखी गई हों।

संस्कृत के काव्य हों अथवा तंत्र के ग्रंथ, उनमें विवरण तो बहुत अधिक दिया गया है लेकिन यह साधना सिद्ध रूप

से कैसे की जा सकती है, इसका वास्तविक स्वरूप क्या है, और इसे जीवन में कैसे उतारा जाय, इसका वर्णन बहुत कम दिया गया है।

हर कोई पुरुष सुन्दर और आकर्षक जन्म से नहीं हो सकता, और हर स्त्री पूर्ण सुन्दरता से युक्त नहीं हो सकती, लेकिन क्या ऐसा संभव है, कि इस रूप से सिद्ध साधना की जाय कि कामदेव स्वयं पुरुष के भीतर स्थित हो जाय तथा रति स्त्री के भीतर स्थित हो जाय, जिससे रूप और यौवन, आकर्षण भीतर ही भीतर बन कर प्रस्फुटित हो।

जो असंभव है, अप्राप्त है, उसे ही तो संभव करना, प्राप्त करना साधना सिद्धि है, और कामदेव रति प्रयोग तो आधार है जीवन का, जीवन से काम को अलग कर देने का तात्पर्य है—पुष्प में से उसकी सुगन्ध को, उसकी बहार को हटा देना, उसके बिना फिर पुष्प का तात्पर्य ही क्या है, सुगन्ध और ताजगी ही तो आधार है, इसी प्रकार काम जीवन की सुगन्ध है, जिसे गलत समझना जीवन की मूलभूत आधार का निरादर करना है।

कामदेव रति साधना कौन करे ?

- जब शरीर हर समय सुस्त रहने लगे और मन में निराशा की भावना स्थान बनाने लगे और कार्यों में सफलता न मिले।

- जब दूसरों को आप प्रभावित न कर सकें, और अपने छोटे से छोटे कार्य के लिए भी गिड़गिड़ाना पड़े।

- जब शारीरिक दृष्टि से पूर्णता का अनुभव न हो, वैवाहिक जीवन में मतभेद हो, आपसी विचारों का मेल न हो।
- जब किसी व्यक्ति विशेष, चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री उसे अपने वश में करना चाहें और जो आपके लिए आवश्यक ही हो।
- जब आपके व्यक्तित्व का प्रभाव मित्रों, सहयोगियों पर न पड़ता हो, और आपको दूसरों से उपेक्षा प्राप्त हो।
- जब कार्यों में गति देनी हो, और हर कार्य हेतु बार-बार प्रयास करना पड़े।
- जब किसी प्रकार की विशेष व्याधि अर्थात् बीमारी हो।
- स्त्रियों के लिए यह आवश्यक हो, जब उनके शरीर तथा चेहरे पर लावण्य न हो तथा वैवाहिक जीवन में नीरसता हो।
- जब इच्छा के अनुरूप मन पसन्द जीवन साथी न मिल रहा हो।

इन सब स्थितियों में **कामदेव रति साधना** संपन्न करनी चाहिए, यह आनन्द पर्व साधना है, इसमें किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि तन, मन, मस्तिष्क और हृदय सबका सम्पूर्ण मिलन, समन्वय आधार है कामदेव साधना में सिद्धि का।

साधना कब करें ?

यही एक ऐसी साधना है, जिसके लिए किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं पड़ती, इसे तो किसी भी दिन रात्रि में, सायंकाल के पश्चात् सम्पन्न किया जा सकता है, रात्रिकालीन इस साधना में नृत्य, गायन एवं जागरण का मन्त्र जप के साथ पूरा अनुष्ठान है, इस साधना के लिए शुक्रवार का दिन अन्य दिनों की अपेक्षा सिद्ध मुहूर्त माना गया है।

"अनंग उपनिषद" ग्रंथ तो इस सम्पूर्ण विषय पर लिखा गया एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है, जिसकी प्रामाणिकता के बारे में संदेह ही नहीं किया जा सकता, प्राचीन ऋषियों ने इस विषय पर इस महान ग्रन्थ की रचना का इसमें नये-नये प्रयोग जोड़ कर वेदोक्त साधनाओं के समान बराबर का स्थान दिया है क्योंकि यह साधना भी उतनी ही आवश्यक है जितनी जीवन में अन्य साधनाएं।

यह सही है कि जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए काम पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, लेकिन सम्पूर्णता तथा मोक्ष की प्राप्ति काम से बच कर नहीं हो सकती, इस पर विजय प्राप्त करने के लिए इसमें सिद्धि प्राप्त करनी ही होगी, तभी पूर्णता आ सकेगी जीवन में।

साधना सामग्री

इस साधना में **'अनंग यंत्र' 'रति प्रीति सप्तबिन्दु मुद्रिका' 'आनन्द मंजरी माला'** के अतिरिक्त पुष्प मालाएं, कपूर, इत्र, अगर, कुंकुम, आंवला, चंदन, पुष्प, वृक्षों के पत्ते, पीला वस्त्र, सफेद, काला, लाल व पीला रंग अर्थात् गुलाल और अबीर आवश्यक है।

इस साधना में आठ प्रकार के कामदेव पूजा सम्पन्न की जाती है, जिससे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो।

साधना क्रम

अनंग उपनिषद ग्रन्थ में कथन है कि साधना से पूर्व ही साधक को वृक्ष के पत्ते, डालियां ला कर उन्हें जल से धो कर निम्न मन्त्र से पूजन करना चाहिए।

।। अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकनाशनः ।।

अर्थात् हे वृक्ष देव मैं उस कामदेव की पूजा करता हूं, जिनकी पूजा से सब प्रकार के शोक नष्ट हो जाते हैं और कामदेव रति उन शोक इत्यदि को नष्ट कर नित्य आनन्द से भर देते हैं।

इसे पीले कपड़े में ढंक कर अपने पूजा स्थान में रखना चाहिए।

अब साधक अपने सामने चावल की आठ ढेरी बना कर उस पर **'आठ लघु नारियल'** स्थापित कर आठ कामों का पृथक पूजन करें, ये आठ काम हैं—**काम, भस्म-शरीर, अनंग, मन्मथ, बसन्तसखा, स्मर, इक्षुधनुर्धर,** एवं **पुष्पबाण** इनका पूजन क्रम निम्न प्रकार से है—

कपूर से	:	ॐ क्लीं कामाय नमः।
गोरोचन से	:	ॐ क्लीं भस्मशरीराय नमः।
इत्र से	:	ॐ क्लीं अनंगाय नमः
अगर से	:	ॐ क्लीं मन्मथाय नमः।
कुंकुम से	:	ॐ क्लीं वसन्तसखाय नमः।
आंवला से	:	ॐ क्लीं स्मराय नमः।
चंदन से	:	ॐ क्लीं इक्षुधनुर्धराय नमः।
पुष्पों से	:	ॐ क्लीं पुष्पबाणाय नमः।

अब अपने सामने रखे हुए यंत्र तथा "रति प्रीति मुद्रिका" पर वृक्ष के पत्ते तथा माला निम्न श्लोक पांच बार पढ़ कर चढ़ानी चाहिए।

सर्वं रत्नमयी नाथ दामनीं वनमालिकाम्।
गृहाण देव पूजार्थं सर्वगन्धमयीं विभो॥

इसके साथ प्रसाद और सुपारी भी अर्पित करें तथा घी का दीपक जला कर दायीं ओर रख दें।

इस साधना का आधार है, काम गायत्री, यह मंत्र अत्यन्त ही प्रभावशाली है, इस मंत्र का जप इस पूरे पूजन क्रम के पश्चात् **'आनन्द मंजरीमाला'** से उसी स्थान पर बैठे-बैठे पांच माला मन्त्र जप करना चाहिए।

काम गायत्री मंत्र

॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय
धीमहि तन्नो अनंग प्रचोदयात्॥

इस प्रकार पांच माला मंत्र जप के पश्चात् अपने सामने कामदेव तथा रति को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रणाम करना चाहिए कि जगत को रति प्रीति प्रदान करने वाले, जगत को आनन्द कार्य प्रदान करने वाले, देव आप को प्रणाम करता हूं तथा आप मेरे शरीर में स्थायी आवास करें एवं मेरी वांछित इच्छाओं को फल प्रदान करते हुए कामान्दामेश्वरी साधना पूर्ण करें।

साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक माला काम गायत्री मंत्र का जप अवश्य ही करें।

साधना के पश्चात् साधक यंत्र तथा मुद्रिका को पुष्प के साथ पीले कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रखें तथा किसी विशेष कार्य पर जाते समय इस पीले कपड़े सहित अपने बैग अथवा अपनी जेब में रख सकते हैं।

यह साधना एक निरन्तर की जाने वाली साधना है, जिसमें केवल सफलता ही है, प्रभाव नियमित मंत्र जपसे शीघ्र ही प्राप्त होता है। ●

क्या

सिद्धाश्रम की कोई *'अशरीरी आत्माएं'* 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' के शिष्यों को संदेश भेजती हैं ?

सिद्धाश्रम ऐसा महान आश्रम है जो आध्यात्मिक, पुनीत स्थली है, प्रत्येक साधक वहां पहुंचने का सपना अपने मन में संजोये रहता है, क्योंकि सिद्धाश्रम दिव्यता, पूर्णता का परम स्थल है और जब साधक अपनी साधनाओं में अमृत सिद्धि प्राप्त कर स शरीर अथवा देह त्याग के पश्चात् यदि पहुंच जाता है, तो वह स्वयं दिव्य हो कर अपनी आने वाली पीढ़ियों का हर प्रकार से भला कर सकता है, लेकिन क्या हर कोई सिद्धाश्रम जा सकता है ?

मान सरोवर और कैलाश पर्वत से उत्तर की ओर स्थित लम्बा-चौड़ा अद्वितीय प्रकृति के गोद में स्थित जिसे ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं विश्वकर्मा ने अपने हाथों से रचना की, श्री विष्णु ने इसकी भूमि, प्रकृति और वायु-मण्डल को सजीव, सप्राण, संचेतना युक्त बनाया और भगवान शंकर की कृपा से यह अजर-अमर है जिससे यहां रहने वाले किसी भी योगी, सन्यासी को दुर्बलता, वृद्धावस्था प्राप्त नहीं होती, यह तो अमृत का दिव्य धाम है।

सिद्धाश्रम की सिद्धयोगा झील, सिद्धाश्रम के सिद्ध योगी, ऊंचे-ऊंचे वृक्ष, सुगन्धित पुष्प-लताएं, छोटे-छोटे मनोहर आश्रम, सात्विक वातावरण की एक झलक ही है, पूर्ण विवरण तो हजारों पृष्ठों में भी नहीं लिखा जा सकता।

सिद्धाश्रम के अपने नियम हैं, यहां प्रवेश पाने का वही अधिकारी है, जिसने स्वयं दिव्य दीक्षा प्राप्त कर दिव्य कोटि की साधना सम्पन्न की हो, उसे ऐसे गुरु से साधना प्राप्त हुई हो जो स्वयं सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सका हो, जिन्हें योग माया, मंत्र, तंत्र का सम्पूर्ण ज्ञान हो, क्योंकि सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने के पश्चात् उसमें अपने आप में ऐसी क्षमता आ जाती है कि वह स शरीर जहां भी जाना चाहे जा सकता है, संसार में कहीं भी विचरण कर सकता है, स शरीर वापिस गृहस्थ में आ सकता है और जब चाहे स देह या सूक्ष्म शरीर से इस आश्रम में आ-जा सकता है।

सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माएं

सिद्धाश्रम में तन्मयता है, आनन्द है, योगी सबसे जुड़े हैं, सिद्धाश्रम में भावना ही लोक कल्याण की भावना है,

सिद्धाश्रम में योगी अपने बारे में नहीं सोचते, उनका केवल एक ही चिन्तन है, कि किस प्रकार जन-जन में साधना-तत्व जाग्रत किया जाय, किस प्रकार उनकी पीड़ाओं को दूर किया जाय, किस प्रकार साधकों के जीवन में आनन्द का उद्वेग उत्पन्न किया जाय, किस प्रकार उनके मार्ग में बिछे कांटों को हटाया जाय, किस प्रकार मन्त्रमय, तन्त्रमय वातावरण की रचना की जाय, किस प्रकार मन की ही नहीं साधकों के तन की भी बाधाएं दूर की जांय जिससे साधक सदैव स्वस्थ और निरोगी रह कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें, श्रेष्ठ साधक का लक्ष्य सिद्धाश्रम में प्रवेश पाना तो है ही, लेकिन उसके पहले वह अपने इस लौकिक जगत की मूल भूत सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर लेना चाहता है जिससे वह स्वयं कामनाओं से रहित होकर आगे बढ़ सके।

अधूरी इच्छाएं अतृप्त आत्माओं को जन्म देती हैं, ये आत्माएं भटकती रहती हैं, क्योंकि इनके जीवन में कुछ ऐसी कमियां रह जाती हैं, जो उन्हें हर समय कचोटती रहती हैं, उनकी सन्तानों को दुःख और पीड़ा रहती है, ऐसी अतृप्त आत्माएं सिद्धाश्रम में प्रवेश योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं की है।

क्या आप साधक हैं ?

साधक जंगल में धुनी जगाने वाला व्यक्ति नहीं है, साधक हिमालय पर्वतों के बीच घर से भाग कर तपस्या करने वाला व्यक्ति नहीं है, श्मशान की राख रगड़ने वाला व्यक्ति नहीं है, साधक सब कुछ छोड़ कर भाग जाने वाला व्यक्ति नहीं है, सच्चा साधक तो अपने जीवन में अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए गुरु कृपा से युक्त, गुरु से दीक्षा प्राप्त कर साधना करने वाला व्यक्ति है, जिसका लक्ष्य है गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर आगे बढ़ते हुए कुण्डलिनी जागरण करना, मूलाधार से प्रारम्भ कर समस्त चक्रों का भेदन कर सहस्रार दर्शन करना, ऐसे साधक को केवल गुरु आशीर्वाद ही नहीं, सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि गुरु कृपा ही तो सिद्धाश्रम का द्वार है।

सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माओं से संदेश

साधक यदि अपने निर्मल हृदय से कोई साधना करता है, अपनी विकट घड़ी में आह्वान करता है, संकट के समय पुकारता है, किसी कार्य के लिए उसे विशेष आत्म-बल की आवश्यकता होती है, आने वाले किसी बड़े खतरे का उसे ज्ञान नहीं होता है, तो क्या उसे संदेश प्राप्त हो सकता है ?

जहां भावना ही कल्याण की है तो संदेश क्यों नहीं प्राप्त होगा, अवश्य प्राप्त होगा, लेकिन आवश्यकता इस बात की है, कि साधक निरन्तर अपने साधना-तत्व को प्रबल बनाये रखें, वह लोगों के बहकावे में आकर अपने मार्ग को न छोड़ें, और सबसे बड़ी बात उसे यह प्रबल विश्वास हर समय होना चाहिए कि मुझे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त है, जिससे मेरे संकट अपने आप दूर होंगे, भावी खतरों के बारे में चाहे वह उसके कार्य से संबंधित हो, परिवार से संबंधित हो, बीमारी से संबंधित हो अथवा किसी दुर्घटना से, यदि वह अपने आपको ऐसी शक्ति के भरोसे छोड़ कर अपनी साधना, अपने कर्त्तव्य पूरे करता रहता है, तो उसे हर स्थिति में संदेश अवश्य प्राप्त होता है।

संदेश का माध्यम सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माओं के लिए सूक्ष्म रूप से विचरण करना, किसी भी प्रकार का स्वरूप ग्रहण करना संभव है, इसलिए यह संदेश साधक को सोते अथवा जागते, कार्य करते अथवा यात्रा करते दिन अथवा रात को कभी भी प्राप्त हो सकते हैं, इसके लिए माध्यम उसका स्वप्न भी हो सकता है, इसके लिए माध्यम कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता है, उसके सामने उसकी पूजा में साधना करते हुए भी संदेश अकस्मात प्राप्त हो सकता है, यह विभिन्न रूपों में

प्राप्त हो सकता है, इसे प्राप्त कर समझने की आवश्यकता अवश्य है ।

सिद्धाश्रम की आत्माओं का आह्वान

साधक साधना के द्वारा आत्मा का आह्वान कर उससे प्रश्न कर अपनी समस्याओं के संबंध में पूछ सकता है, इस आह्वान जिसे **"सिद्ध आत्म आह्वान"** कहा जाता है, का प्रयोग पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न करना चाहिए, जब भी आप इन आत्माओं को बुलाएं, तो उन्हें पूरा सम्मान दें, नम्रता के साथ शिष्ट भाषा का प्रयोग कर प्रश्न पूछें, और ये सिद्ध आत्माएं आप द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पूर्ण प्रसन्नता साथ देती हैं, लेकिन कभी भी प्रयोग के तौर पर, हंसी के रूप में अथवा दूसरों के सामने अपने चातुर्य को बताने के लिए अथवा परखने के उद्देश्य से अथवा गलत प्रश्नों को पूछने के लिए, किसी गलत कार्य की पूर्ति हेतु कार्य करने की इच्छा रखते हुए सिद्ध आत्मा का आह्वान उचित नहीं है, इससे उस समय सिद्धाश्रम आत्माएं आती तो अवश्य हैं लेकिन साधक को ऐसे श्राप मिल सकते हैं जिससे आगे का जीवन नरकमय हो सकता है, जब भी यह कार्य करें, पूर्ण सात्विक भाव से सम्पन्न करें।

सिद्धाश्रम आत्म-आह्वान कैसे करें ?

रविवार का दिन ब्रह्माण्ड के तेजस्वी देव सूर्य देव का दिन है, और इस दिन सूर्योदय के पश्चात् यह प्रयोग करना सर्वथा उचित है, इस दिन साधक स्नान कर, स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठें, पूजा स्थान में बार-बार किसी प्रकार का व्यवधान पड़ने की आशंका हो तो ऐसे एकान्त कमरे में प्रयोग सम्पन्न करें, दरवाजा भिड़ा कर थोड़ा सा खुला रखें।

अपने सामने 'बड़ा गुरु चित्र' तथा गुरु यन्त्र स्थापित करें, सम्पूर्ण विधि द्वारा "गुरु यन्त्र" का पूजन कर "गुरु रहस्य सिद्धि माला" द्वारा गुरु मन्त्र का जप सम्पन्न करें, इस प्रकार इस माला से पांच माला मन्त्र जप सम्पन्न करें, कमरे में धूप और अगरबत्ती अवश्य ही जलती रहे ।

अब साधक कांसे की कटोरी में **"आत्म यंत्र"** स्थापित करें, तथा उस पर केवल चंदन तथा केसर चढ़ाएं क्योंकि सिद्धाश्रम की विशिष्ट आत्माओं का पूजन सात्विक रूप से चंदन, केसर द्वारा किया जाता है, अब अपने सामने एक कागज पर पहले से लिख कर रखे हुए सिद्धात्मा बीज मंत्र का जप प्रारम्भ करें ।

सिद्धात्मा बीज मंत्र

।। ह्रीं सिद्धात्मा भं सं मं पं सं क्षं दृट्वा इति ।।

अब इस मन्त्र को **'गुरुरहस्यसिद्धिमाला'** द्वारा ही उत्तर दिशा की ओर मुंह कर जोर-जोर से जप करना प्रारम्भ करें, एक माला मंत्र जप होते ही पुनः पांच बार गुरु मन्त्र का जप करें और दूसरी माला बीज मन्त्र का जप करें ।

साधक को तीन माला जप करते-करते एक रहस्यमय वातावरण का अनुभव होने लगता है ऐसा लगता है कि कोई आपके ऊपर आशीर्वाद मुद्रा में हाथ किये है, शरीर के रोम-रोम खड़े हो जाते हैं, इस स्थिति में भी साधक माला को रख कर दोनों हाथ जोड़ कर गुरु मन्त्र बोले और किसी प्रश्न विशेष को जिसका उत्तर वह जानना चाहता है पूछे, यह प्रश्न किसी भी प्रकार का हो सकता है, आत्मा से प्रश्न पूछते समय संकोच नहीं करना चाहिए ।

उसी समय जैसे कि कोई बिजली कौंधी हो, साधक को कटोरी हिलती हुई प्रतीत होती है और उसे उस प्रश्न विशेष का उत्तर प्राप्त होता है, अपने कार्यों के संबंध में संदेश प्राप्त होता है, इस संदेश को पूर्ण रूप से समझ कर उसकी व्याख्या करनी चाहिए और जब यह कान्तिमान स्थिति शान्त हो, तो साधक को गुरु आरती सम्पन्न करनी चाहिए ।

इस प्रकार एक बार पूर्ण विधि-विधान सहित प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् साधक कभी भी किसी भी कार्य के संबंध में निर्देश प्राप्त करने हेतु सिद्धात्मा बीज मंत्र का २१ बार जप करना चाहिए, स्पष्ट दिशा निर्देश प्राप्त होता है ।

सिद्धात्मा का प्रवेश यदि आपके घर में हो जाता है तो आप यह निश्चित जानिये कि हर कार्य के संबंध में आपको दिशा निर्देश प्राप्त होंगे, यदि कोई आपको धोखा देने का प्रयास करेगा तो सिद्धात्मा से संदेश प्राप्त होगा कि अमुक व्यक्ति से कार्य न करें, यदि कोई दुर्घटना होने वाली है तो तत्काल संदेश प्राप्त होगा कि अमुक यात्रा न करें, अथवा अमुक स्थान पर न जांय।

इन संदेशों को समझते हुए इनके अनुसार कार्य करने की पूर्ण आवश्यकता है, तभी आगे निरन्तर संदेश प्राप्त होते रहते हैं, साथ ही अपनी साधना निरन्तर करते रहें, साधना के पथ से विचलित हुए साधक के लिए कोई भी मार्ग खुला नहीं रहता है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में कई शिष्य, जो कि साधना में एक विशेष स्तर प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें इस प्रकार की दिव्य आत्माओं के संदेश अपने जीवन में निरन्तर प्राप्त होते रहे हैं। ●

दुर्गा को प्रत्यक्ष किया जा सकता है

इन

तांत्रिक क्रियाओं से

भगवती दुर्गा की पूजा-आराधना के संबंध में जितने ग्रन्थों की रचना की गई है, सभवतया किसी अन्य के संबंध में इतनी अधिक रचना नहीं है इसका कारण भगवती दुर्गा की आधारभूत शक्ति जिसमें सम्पूर्ण विश्व की सगुण-निर्गुण शक्तियों का स्वरूप है। अलग-अलग स्वरूपों में अलग-अलग कार्य हैं, भगवती दुर्गा ही जगत पालक, माया-धीश्वरी है तथा संहारकारिणी आद्या-शक्ति भी है।

जीवन में सृजन और विखण्डन दोनों ही प्रक्रियाएं साथ-साथ चलती रहती हैं, इन दोनों के बिना जीवन प्रक्रिया चल ही नहीं सकती, शुद्ध भावों से शक्तियों का विकास साधक के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं कष्ट, पीड़ा, शोक, और दुःखों का नाश भी आवश्यक है, इसीलिए मंत्र ज्ञाता हो चाहे तंत्र ज्ञाता, साधना किसी भी स्वरूप में साधक करें, उसे देवी भगवती दुर्गा की साधना के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

भगवती दुर्गा ही मूल प्रकृति, ईश्वरी, परब्रह्म स्वरूपा, परमतेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार है।

देवी और इष्ट

साधना में इष्ट का बड़ा महत्व है, साधक जानते हैं कि वह अपने इष्ट स्वरूप को जिसे भी मानें, उसका अत्यन्त प्रबल होना आवश्यक है, तभी वह अपने कार्यों में सफल हो सकता है, अपने व्यक्तित्व को, तेज को प्रबल बना सकता है, इष्ट बिना ज्ञान नहीं, शक्ति नहीं, पूर्णता नहीं।

ऋग्वेद में लिखा है, कि भगवती दुर्गा ही सभी उपास्य देवों में प्रधान है, देवी शक्ति से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र उत्पन्न हुए, इन्द्र, अग्नि तथा स्वास्थ्य के देव अश्विनी कुमारों को धारण किये हुए हैं, यह परम-शक्ति देवी तो—

"निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या"

अर्थात् इस जगत में देवी के अतिरिक्त दूसरा कौन है, सब कुछ है जो भगवती दुर्गा का ही स्वरूप है, प्रकृति, माया, शक्ति सब देवी के पर्यायवाची हैं, इसीलिए जब

तक इष्ट स्वरूप दुर्गा प्रबल नहीं है, तो साधक की सब साधनाएं अधूरी हैं, यदि तत्काल कोई साधना सफल भी हो जाय तो जब तक इष्ट स्वरूप भगवती दुर्गा सिद्ध न हो जाय तब तक वह साधना-फल स्थायी नहीं रह सकता, क्योंकि साधना का आधार-शक्ति और शक्ति की आधार-भूत देवी भगवती जगदम्बा ही है।

साधक अलग-अलग नामों से अलग-अलग स्वरूप से पूजा करता है, पूजा लक्ष्मी स्वरूप में करें अथवा ज्ञान स्वरूप सरस्वती स्वरूप में करें, चण्डी, काली स्वरूप में करें, मूल स्वरूप तो दुर्गा साधना ही है।

यह सब तो देवी के असंख्य स्वरूप हैं, साधक अपनी समझ के अनुसार साधना करता है और जब वह इस परम-तत्व तक पहुँच जाता है, तो उसे सिद्धि प्राप्त होती ही है, अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग स्वरूपों में पूजा का शास्त्रोक्त विधान है, उसी रीति के अनुसार पूजा साधना सम्पन्न की जा सकती है।

मूल प्रश्न यह है कि क्या भगवती दुर्गा को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध किया जा सकता है जिससे साधक को वह वरदहस्त प्राप्त हो जाय, अंधेरे में छलांग लगाने से कुछ लाभ नहीं है, साधक के लिए आवश्यक है, कि श्री गुरु-कृपा का फल प्राप्त कर उनके बताये गये निर्देशों के अनुसार साधना कार्य सम्पन्न करें, तो उसे सहज, सरल साधना मार्ग प्राप्त होता है।

१- सर्व सिद्धि प्रदायक प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है, दुर्गा पूजा के लिए किसी भी प्रकार के मुहूर्त की आवश्यकता नहीं रहती, देवी रहस्य तन्त्र के अनुसार-दुर्गा पूजा में न तो कोई विशेष विधान है, न विघ्न है और न कठिन आचार।

प्रातः सूर्योदय से पहले उठ कर साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान को स्वच्छ करें, जल से धोकर स्थान शुद्धि और भूमि शुद्धि कर अपना आसन बिछाएं, आसन पर बैठ कर ध्यान करें, अपने चित्त को एकाग्र करें, कार्य सिद्धि साधना के संबंध में पूरे विश्वास के आधार पर कार्य करते हुए, संकल्प लें।

अपने सामने साधक सिंह पर स्थित देवी का एक बड़ा चित्र (तस्वीर) स्थापित करें, और एक ओर घी का दीपक तथा दूसरी ओर धूप अगरबत्ती इत्यादि जलाएं।

अब बांएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से अपने मुख, शरीर इत्यादि पर छिड़कते हुए निम्न मन्त्रों के उच्चारण के साथ तत्व-न्यास सम्पन्न करते हुए, थोड़ा जल दोनों आंखों में लगा कर भूमि पर छोड़ दें।

ॐ आत्म तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय नमः।
ॐ दुं शिव तत्वाय नमः।
ॐ गुं गुरु तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शक्ति तत्वाय नमः।
ॐ श्रीं शिव शक्ति तत्वाय नमः।

इस साधना में शुद्ध मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त "दुर्गा यंत्र" का महत्व विशेष रूप से है, सामने बाजोट (चौकी) पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पुष्प की पंखुड़ियों का आसन बनाएं, तथा दुर्गा यंत्र को दुग्ध धारा से फिर जल धारा से धो कर, साफ कपड़े से पोंछ कर—

ॐ ह्रीं वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दुर्गा यंत्र को पुष्प के आसन पर स्थापित कर अबीर, गुलाल, कुंकुंम, केसर, मोली, सिन्दूर अर्पित करें, इसके पश्चात् एक पुष्प-माला देवी के चित्र पर चढ़ाएं तथा दूसरी माला इस देवी यंत्र के सामने रख दें।

अब दुर्गा की शक्तियों का पूजन कार्य सम्पन्न करें, सामने दुर्गा यन्त्र के आगे 'नौ गोमती चक्र' स्थापित करें, प्रत्येक चक्र के नीचे पुष्प की एक-एक पंखुड़ी रखें, तथा चावल को कुंकुंम से रंग कर मंत्र जप करते हुए इन नौ शक्तियों का पूजन सम्पन्न करें।

ॐ प्रभायै नमः ।	ॐ मायायै नमः ।
ॐ जयायै नमः ।	ॐ सूक्ष्मायै नमः ।
ॐ विशुद्धायै नमः ।	ॐ नन्दिन्यै नमः ।
ॐ सुप्रभायै नमः ।	ॐ विजयायै नमः ।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ।	

अब गणेश पूजन कर देवी का पूजन सम्पन्न करें, अपने हाथ में धूप लेकर २१ बार धूप करें, फिर अपने स्थान पर पालथी मार कर बैठें, और दुर्गा अष्टाक्षर मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि मंत्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

शारदा तिलक में लिखा है, कि शान्त हृदय से चित्त में शान्ति तथा एकाग्रता रखते हुए, साधक इस मन्त्र की ११ माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें तो उसे साक्षात् स्वरूप में प्रगट हो कर अष्ट-सिद्धि वरदान देती है, साधक को जो वर प्राप्त होता है, उससे साधक भैरव के समान हो जाता है, उसे अभय का वह स्वरूप प्राप्त हो जाता है कि उसके मन से भय, डर पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, शरीर की व्याधियों का निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए भी यही विधान सर्वश्रेष्ठ है।

पूजा के पश्चात् साधक देवी की आरती सम्पन्न कर तथा ताम्र पात्र में रखे जल को आचमनी में ले कर ग्रहण करें तो उसके भीतर शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।

२- चाथर्वणाय संहिता चण्डिका दुर्गा सिद्धि प्रयोग

दुर्गा का यह स्वरूप विशेष प्रबल तथा ज्वलन-शील दाहक प्रयोग माना गया है, जो साधक राज्य-बाधा, शत्रु-बाधा, मुकदमे इत्यादि से विशेष दुःखी हो, चिन्ताओं का भार बढ़ता ही जा रहा हो, तो उसे इस स्वरूप की साधना अवश्य करनी चाहिए।

देवी दुर्गा कल्याणी स्वरूप है, जिनके तीव्र प्रभाव से दुष्टात्माओं का नाश हो जाता है और प्रबल से प्रबल शत्रु भी वश में होकर दास स्वरूप बन जाता है।

यह प्रयोग एक तांत्रिक प्रयोग है और रात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है, इसके लिए कुछ विशेष सामग्री तथा विशेष अनुष्ठान की आवश्यकता रहती है, सामग्री

सहित सभी व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में उठने का विधान वर्जित है।

रात्रि साधना स्वरूप

साधना सायंकाल के पश्चात् स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण करें, अपने पूजा स्थान में अथवा एकान्त कमरे में यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, आसन ऊनी कम्बल अथवा मृगछाला हो सकता है, अपने सामने देवी का विकराल स्वरूप का चित्र स्थापित कर सिन्दूर से चित्र पर तिलक कर स्वयं भी तिलक लगाएं और आसन ग्रहण करें।

अपने सामने "चण्डी यन्त्र" शुद्ध रूप से धो कर घी लगा कर पोंछ कर काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करें, एक ओर एक कलश स्थापित कर उस पर नारियल रखें, सर्वप्रथम कलश पूजन सम्पन्न कर भैरव का ध्यान कर मौली बांध कर एक सुपारी भैरव स्वरूप स्थापित करें, अब एक ओर धूप तथा दूसरी ओर दीपक जला कर एक कटोरे में देवी के सामने खीर का प्रसाद रखें, अब इस साधना में साधक वीर मुद्रा में बैठ कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए, सर्वप्रथम देवी से प्रार्थना कर पूजन की आज्ञा प्राप्त कर ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ ह्लः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीजंयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके मम सकल मनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय निवारय नमो नमः ॥

अपने सामने यन्त्र के चारों ओर '२१ तांत्रोक्त फल' एक वृत्त में स्थापित करें, ऊपर लिखे ध्यान मन्त्र को बोलते हुए काले तिल और सरसों सिन्दूर, मिलाकर प्रत्येक बार ध्यान मन्त्र का जप कर एक तांत्रोक्त फल पर चढ़ाएं, इस प्रकार २१ तांत्रोक्त फलों पर यह प्रयोग सम्पन्न करना है, ये २१ तांत्रोक्त फल जीवन की २१ बाधाओं के प्रतीक हैं, जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो अपने ललाट पर चन्दन से त्रिपुण्ड तिलक बनाएं तथा चण्डिका महा मन्त्र का जप कार्य प्रारम्भ करें।

चण्डी महा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फट् ॥

इस प्रकार ११ माला जप कर पूजन कार्य सम्पन्न करें तथा यह मन्त्र जप मौन रूप से नहीं अपितु जोर-जोर से बोल कर सम्पन्न करना चाहिए, इस मन्त्र जप के मध्य में ही देवी के चण्डी स्वरूप के दर्शन होते हैं, साधक उसी मुद्रा में जप कार्य सम्पन्न करता रहे।

जब साधना पूर्ण हो जाय तो नमस्कार इत्यादि सम्पन्न कर आरती उतार कर, सामने रखे हुए खीर के प्रसाद को ग्रहण करना चाहिए।

तांत्रोक्त फल, सरसों तथा तिल को दूसरे दिन किसी एकान्त स्थान पर जाकर गाड़ देना चाहिए, यह सर्व दुःख नाशक चण्डी सिद्धि प्रयोग सम्पन्न करने से भय, बाधा का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है। ●

इस मास के व्रत, पर्व, त्यौहार—(मार्च-६१)

५- रंग पंचमी
७- शीतला सप्तमी
१२- पाप मोचनी एकादशी
१७- नवरात्रि प्रारम्भ
२०- श्री पंचमी
२३- दुर्गाष्टमी
२४- राम नवमी
२६- कामदा एकादशी
२८- महावीर जयंती
२९- पूर्णिमा व्रत
३०- हनुमान जयंती

गुरुदेव-तीर्थ में

नवरात्रि का नौ दिवसीय

"निखिलेश्वर–महोत्सव"

(१७-३-९१ से २३-३-९१ तक)

चैत्र नवरात्रि पर्व–साधना का तीव्रतम जाज्वल्यमान उत्सव महोत्सव है, जिसमें सच्चे साधक को जाग्रत होना ही पड़ता है, और उसका जागरण आदि शक्ति भगवती दुर्गा की शक्ति प्राप्त अवश्य कर सकता है, उसे केवल अपने भीतर 'निखिल ज्योति' जलानी है, विकार रूपी अंधकार दूर हो कर देवी का वह प्रसाद आशीर्वाद उसे प्राप्त हो सकता है, जिसे अन्य मार्ग पर हजारों प्रयत्नों से भटकने पर भी न मिले।

मत भूलो कि जीवन में विशेष महत्वपूर्ण क्षण बार-बार नहीं आते, साधना, चेतना जाग्रत करने के इन महत्वपूर्ण क्षणों को बांध लो।

गुरुदेव का आह्वान है, कि उनका हाथ उठ चुका है, अपने पैरों में ही नहीं, मन, हृदय में भी थिरकन उत्पन्न करो, जिससे प्राणवायु प्रस्फुटित हो सके, अधूरेपन को मिटा कर पोर-पोर में, कण-कण में आनन्द समा सके।

१- इस बार चैत्र नवरात्रि महोत्सव गुरुदेव तीर्थ जोधपुर में सम्पन्न किया जायेगा, जो हर दृष्टि से अनूठा, अद्वितीय साधना का चैतन्य महोत्सव होगा।

२- इस बार का नवरात्रि महोत्सव 'निखिलेश्वर महोत्सव" है, जिसमें पूज्य गुरुदेव प्रत्येक साधक का हाथ पकड़ कर उससे साधना क्रियाएं सम्पन्न कराएंगे।

देवी के दर्शन करना ही काफी नहीं है, उस देवी के तप को अपने भीतर भी लेना है, और यह समाहित करना पूर्णता का पहला कार्य है, इसके पश्चात् जीवन में प्रत्येक क्षण सुख और सौभाग्य का क्षण है।

इस बार प्रथम दिन यज्ञ का प्रारम्भ होगा, और यह आहुति पूरे पर्व में निरन्तर चलती रहेगी, प्रत्येक दिन यह आहुति का विशेष प्रयोग सम्पन्न कराया जायेगा जिससे साधक स्वयं यज्ञ को पूर्ण रूप से समझ सकें, यह अग्नि साधारण अग्नि नहीं है, इस अग्नि में भगवती जगदम्बा अपने सम्पूर्ण स्वरूप में प्रगट होगी, और इसका दर्शन साधक स्वयं प्रत्यक्ष कर सकेगा, साधना के इस तीव्रतम स्वरूप को पूज्य गुरुदेव स्वयं सम्पन्न कराएंगे।

ध्यान योग

आत्म शक्ति आन्तरिक शक्ति को जाग्रत कर उसके प्रवाह को नियन्त्रित कर एक सही दिशा की ओर मोड़ना तथा इस शक्ति-तत्व को जाग्रत करना ही 'ध्यान योग' है, यह क्रिया-प्रक्रिया निश्चय ही कठिन है, इस क्रिया में मन के भीतर के विकारों को दूर कर, तनावों को दूर कर, शुद्ध तत्व के लिए स्थान बनाना पड़ता है, तभी तो साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

इस "निखिलेश्वर महोत्सव" में इसी बिन्दु को ध्यान में रखते हुए ध्यान योग की वे क्रियाएं सम्पन्न कराई जाएंगी, जिससे साधक साधना की सीढ़ियां सहजता से चढ़ सकें, अपने मानसिक तनावों को दूर कर अपने भीतर निर्मलता प्राप्त कर सकें।

कुण्डलिनी चेतना क्रिया

रहस्यों के संसार में प्रवेश कर अपने प्राणमय कोषों को खोलने की प्रक्रिया 'कुण्डलिनी जागरण' की प्रक्रिया है, लेकिन इसके लिए पहले यह तो आवश्यक है कि कुण्डलिनी चैतन्य हो।

यह चेतना ध्यान योग की प्रक्रिया का दूसरा सबसे बड़ा अध्याय है, इस क्रिया को कोई भी व्यक्ति उठा कर आपको नहीं दे सकता, कुण्डलिनी तो गुरुदेव के दिव्य, चैतन्य प्रकाश तले उनकी रश्मियों को ग्रहण कर अपने भीतर उतारने की प्रक्रिया है।

जिस प्रकार प्रचण्ड अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिए एक छोटी तीली से अग्नि चैतन्य करनी होती है, उसी प्रकार मूलाधार से सहस्रार तक कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया का प्रारम्भ दीक्षा, ध्यान, प्राणायाम के द्वारा प्रारम्भ अवश्य किया जाता है, लेकिन यदि पूर्ण दिशा निर्देश नहीं है, योग्य मार्गदर्शन नहीं है, तो यह प्रक्रिया असंभव है।

और इसी बात पर ध्यान देते हुए प्रारम्भिक स्थिति से प्रारम्भ करते हुए साधक की कुण्डलिनी चेतना क्रिया के अध्याय, इस **'निखिलेश्वर महोत्सव'** में सम्पन्न कराये जाएंगे।

ऐसी प्रक्रिया जिसे सम्पन्न करने हेतु, योगी-सन्यासी तपस्या करते हैं, पहाड़ों, गुफाओं, श्मशानों में बैठ कर साधना करते हैं और ऐसी दिव्य साधना आपको इस महत्वपूर्ण अवसर पर प्राप्त हो रही है, तो इससे बढ़ कर और अधिक सौभाग्य क्या हो सकता है?

सन्यास-समारोह

सन्यास का तात्पर्य 'स' तथा 'न्यास' अर्थात् 'न्यास के साथ', और 'न्यास' का तात्पर्य है 'समर्पण', यह समर्पण अपने दुःखों का, कष्टों का, शारीरिक बाधाओं का आदि-शक्ति के प्रति है, जिससे जीवन में जल में रहते हुए कमल की भांति निर्लिप्त हो कर पवित्रता प्राप्त करनी है, जो बीत गया उसे त्यागना है और अपने आपको सम्पूर्ण रूप से सौंप देना है।

पूज्य गुरुदेव 'निखिलेश्वर महोत्सव' सन्यास समारोह में अपने प्रत्येक साधक शिष्य को उसकी चेतना के अनुसार उसे सन्यासी नाम देकर उसे एक नये व्यक्तित्व को प्रारम्भ करने हेतु दीक्षा देंगे, और यह सन्यास दीक्षा हर साधक के लिए जीवन का वह मधुर मोड़ होगा, जिसमें कांटों से भरे मार्ग को छोड़ कर सहजता, मधुरता के आनन्द-मार्ग पर अपने आगे के जीवन को चलाना है ।

साधना शिविर–प्रत्येक क्षण का महत्वपूर्ण उपयोग

साधना के क्षेत्र को मंत्र तंत्र अलग-अलग क्षेत्रों में नहीं बांटा जा सकता, भगवती दुर्गा साधना और उसके दस महाविद्याओं की साधना मांत्रोक्त तारा साधना और तांत्रोक्त तारा साधना, त्रिपुर सुन्दरी साधना तथा भैरवी साधना, प्रत्येक अपना विशिष्ट आधार लिए हुए साधना हैं, और नवरात्रि के इस विशेष महोत्सव में ये साधनाएं सम्पन्न कराई जाएंगी ।

जब तक रोम-रोम से साधना तत्व जाग्रत नहीं हो तब तक साधना का उद्देश्य ही नहीं है, इन साधनाओं में भगवती दुर्गा साधना कर उनके साक्षात् स्वरूप का दर्शन कर अपने जीवन की अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति कर पूर्णता प्राप्त करनी है ।

आप देखेंगे कि इस पर्व में जब साधनाएं आपको जाग्रत कर सम्पन्न कराई जाएंगी तो आप उस ध्यान में, उस योग में, उस आनन्द में डूब जाएंगे ।

विश्वामित्र और वशिष्ठ ने, नारद तथा अष्टावक्र ने, गौतम तथा कण्व ऋषि ने, याज्ञवल्क्य तथा व्यास पुत्र सुखदेव ने साधना के जिन तत्वों की, जिन अलग-अलग स्वरूपों की व्याख्या की है, उसे साधक अपने जीवन में किस प्रकार उतार सकता है, यह पूर्ण तत्व इस 'निखिलेश्वर महोत्सव' में पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से आप ग्रहण करेंगे, क्रियात्मक पक्ष के स्वरूप में प्राप्त करेंगे, और यह प्राप्त करना जीवन का सौभाग्य है ।

आप सब गुरु भाई-बहिनों को आह्वान कर रहे हैं, यह जीवन आपका है, और आप के साथ गृहस्थ धर्म की भाग-दौड़, पाबन्दियां, वर्जनाएं जुड़ी हैं, इन स्थितियों में रहते हुए यदि आप साधक हैं तो यहां आकर इस नवरात्रि शिविर 'निखिलेश्वर महोत्सव' में सम्मिलित हों, और जीवन की गौरव पूर्णता को प्राप्त करने हेतु बढ़े ।

यह महोत्सव साधना का, पवित्रता का, विकास का, दुःखों के विनाश का, शक्ति जागरण का, सिद्धि प्राप्ति का, दिव्य चेतना का, मानसिक ताजगी का, सिद्ध ध्यान का, कुण्डलिनी चेतना का, अद्भुत आनन्द महोत्सव है, जिसमें साधना के साथ जीवन का आनन्द है, संगीत कीर्तन, काव्य का सुमधुर सुख है, अपने हृदय कपाट खोल कर पूज्य गुरुदेव से सब कुछ प्राप्त करने का महोत्सव है ।

सर्वे भवन्ति सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।।

सूक्तियां

* भौंकने वाले जिन्दा कुत्ते से मरा हुआ शेर कहीं ज्यादा श्रेयष्कर है ।
* "हतानीरसनाथा स्त्री हताऽसंस्कारिणी च धी ।"
  अर्थात् जिसका पति नीरस (स्नेह शून्य) हो उस स्त्री का जीवन व्यर्थ सा ही होता है ।
* जो निरन्तर कार्य करता रहता है उसके पास मृत्यु और बुढ़ापा नहीं फटकता ।
* जिसे प्रेम करने की कला नहीं आई उसे जीवित रहने या सांस लेने की भी कला नहीं आई ।

पूर्व जन्म और इस जन्म के

समस्त पापों की निवृत्ति होती है

"पाप मोचनी दीक्षा" से

जो आप घर बैठे ले सकते हैं

पाप मोचन का तात्पर्य है शरीर में स्थित विकारों का नाश, निवृत्ति, तथा विकार का तात्पर्य जीवन में जो दोष हैं चाहे वह इस जीवन के हों अथवा पूर्व जीवन के, क्योंकि पूर्व जन्म में किये गये कृत्यों का प्रभाव भी इस जीवन पर पड़ता ही है।

साधक तथा शिष्य अपने गुरु के पास इसी उद्देश्य से आता है, कि वह अपने आपको पूर्ण समर्पित कर गुरु के दिव्य ज्ञान एवं प्रभाव से अपने भीतर के विकारों का, अपने इस जन्म और पूर्व जन्म के दोषों का नाश कर दें, शिष्य अपना मार्ग स्वयं नहीं पहिचान सकता, वह केवल गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना जानता है, और जब वह सही मार्ग पर चलता है, तो उसे सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

पाप मोचन दीक्षा

दीक्षा का तात्पर्य केवल गुरु-मन्त्र शिष्य को देना ही नहीं है, दीक्षा का तात्पर्य है, गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा का संगम, गुरु आत्म-दान और शिष्य का आत्म समर्पण, यह दीक्षा है, यह शक्तिपात की एक विशेष प्रक्रिया है, जो शिष्य के भीतर सुप्त शक्तियों को जाग्रत करने की प्रक्रिया है, दीक्षा का तात्पर्य है, गुरु द्वारा ज्ञान, शक्ति और सिद्धि का दान, तथा शिष्य के अज्ञान और पाप का क्षय, जब तक पापों का मोचन, दोषों का शमन, पूर्ण रूप से नहीं हो जाता तब तक शिष्य में पूर्णता नहीं आ सकती।

"रुद्रयामल तन्त्र" के अनुसार जो साधक अपने गुरु के पास जाकर पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना चाहता है तो

किसी भी रूप में भूत शुद्धि करा कर पाप मोचनी दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, इस साधना का स्वरूप अत्यन्त ही उपयोगी और प्रभावकारी है, यह तो आगे बढ़ने की दिशा में पहला प्रयास है ।

सबसे पहले साधक गुरु के सामने बैठे और शुद्ध मुहूर्त में गुरु उसे दीक्षा प्रदान करें, शिष्य अपने हाथ में जल ले कर संकल्प भरें, अपने हाथों में एक नारियल ले कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें, गुरु शिष्य के ललाट पर तिलक लगाये ।

विनियोग

ॐ शरीरस्यान्तर्यामी ऋषिः सत्यं देवता प्रकृति पुरुषश्छन्दः पापपुरुषशोषणे विनियोगः ।।

इसके बाद साधक अपने बांएं हाथ में जल ले कर शरीर पर छींटें मारे और इस जन्म के दोषों का प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है, यह शरीर शुद्धि, आत्म शुद्धि की पाप मोचनी दीक्षा का स्वरूप है ।

ध्यान

हृदय में स्थित, कमल जिसका मूल धर्म और नाल ध्यान है, आठ प्रकार के ऐश्वर्य उसके दल हैं, प्रणव द्वारा उद्भावित है उस कणिका पर दीप शिखा के समान ज्योति स्वरूप जीवात्मा स्थित है, वह जीवात्मा में विष्णु स्वरूप, शिव स्वरूप, ब्रह्मा स्वरूप स्थित है और कुण्डलिनी तथा जीवात्मा का मिलन है, उसी की जाग्रति जीवन की सम्पूर्णता है, ऐसी शुद्ध जीवात्मा को मैं पूर्ण भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं।

ऐसा ध्यान सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु शिष्य के शरीर में ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की स्थापना करें ।

इसके पश्चात् साधक "रुद्राक्ष माला" से निम्न शुद्धि मन्त्र की पांच मालाएं उसी स्थान पर सम्पन्न करें ।

बीज मन्त्र

ॐ परमशिव सुषुम्नापथेन मूलश्रृंगाटक उल्लस उल्लस ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल सो हं हंसः स्वाहा ।।

इस प्रकार के पूजन के पश्चात् साधक के शरीर में हलचल सी प्रारम्भ होती है और भीतर ही भीतर विशेष मंथन प्रारम्भ होता है, यह पाप दोष मोचन शमन की पहली प्रक्रिया है ।

शमन दीक्षा का दूसरा क्रम

पाप मोचन–शमन दीक्षा के तीन क्रम में पहला क्रम समाप्त होते ही शिष्य के लिए दूसरा क्रम प्रारम्भ किया जाता है ।

साधक अपने सामने एक ताम्र पात्र में शिवलिंग स्थापित करें तथा गुरु उसे 'जीवात्मा शुद्धि रूप' से अभिषेक करें इस शुद्धि अभिषेक के जल को शिष्य के ऊपर छिड़क कर शुद्धि कार्य सम्पन्न करें, उसके पश्चात् निम्न बीज मन्त्र से २१ बार कुश को जल में डुबो कर उस पर छिड़कते हुए शुद्धता की ओर अग्रसर हों ।

बीज मन्त्र

।। ॐ यं लिंगशरीरं शोषय शोषय स्वाहा ।।

इस दूसरे क्रम की समाप्ति होते-होते साधक को इस प्रकार का आभास होता है कि उसके शरीर में से कुछ निकल कर बाहर जा रहा है, और भीतर ही भीतर एक खालीपन अनुभव होता है, रोम खड़े होते हैं लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है, जब भी आन्तरिक स्वरूप से दोष अणु स्वरूप में बाहर निकलते हैं तो शरीर रोकता है, शुद्धि प्रक्रिया में कष्ट अवश्य होता है लेकिन कुछ समय बाद ही एक शान्ति स्थिरता का अनुभव होता है

शमन दीक्षा का तीसरा क्रम

तीसरे क्रम में साधक के वर्तमान जीवन के दोषों का शमन क्रम पूर्ण किया जाता है जब तक शरीर के अतिरिक्त मन भी निरोगी नहीं हो जाता, तब तक किसी भी कार्य में अथवा साधना में सिद्धि नहीं हो पाती।

यह दीक्षा परम शिव पद प्राप्त करने की साधना है, इसमें गुरु अपने शिष्य को पूर्व की ओर मुंह कर बिठाये '१०८ कमलबीज' द्वारा उसके शरीर के १०८ स्रोत बिन्दुओं को जाग्रत करते हुए उसमें १०८ लक्ष्मी स्वरूपों की स्थापना करें।

फिर लक्ष्मी के स्वरूप यन्त्र को अग्निकोण में स्थापित कर उसके आगे अग्नि का दीपक जलाएं और निम्न बीज मन्त्र से आह्वान करें —

बीज मन्त्र

।। ॐ ह्रीं वैष्णवै प्रतिष्ठा कमलात्मनै हुं नमः ।।

इस क्रम की पूर्णता के पश्चात् शिष्य गुरु का पूजन करें, गुरु को शिव स्वरूप मानते हुए आरती पुष्प इत्यादि से पूजन सम्पन्न कर अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दें।

इस प्रकार पूजन कार्य सम्पन्न कर शिष्य नैवेद्य एवं दक्षिणा समर्पित करें तथा अपने दोषों के पूर्ण नाश हेतु प्रार्थना कर गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करें।

यह दीक्षा साधारण दीक्षा नहीं है, जब इस दीक्षा द्वारा इष्टदेव और गुरुदेव के ध्यान में चित्त तन्मय हो जाता है, और दीक्षा द्वारा उनकी कृपा प्राप्त होती है तो चित्त पूर्ण रूप से शुद्ध हो कर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, और पवित्रता, शक्ति, शान्ति की शत-शत धाराएं उसके "स्व" को आप्लावित व अत्यन्त दिव्य बना देती हैं।

आपको यह सब करने की जरूरत नहीं है आप १२-३-९१ को प्रातः ७ बजे आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय, गुरुदेव जोधपुर में बैठे-बैठे ही आपको उपरोक्त क्रम से पूर्ण दीक्षा प्रदान कर देंगे, आपको आसन पर बैठने से पूर्व मात्र **"पाप मोचन दीक्षा यन्त्र"** धागे में पिरो कर गले में धारण कर लेना है।

नियम

- आप इस प्रपत्र को आज ही भर कर भेज दीजिये, हम आपको १०५)रु० की वी०पी० से "सिद्ध पाप मोचन दीक्षा यन्त्र" भेज रहे हैं।
- वी०पी० छूटने पर आपने जो अपने मित्र का पता दिया है, उसे सन् ९१ का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहेंगे।
- और आपको पाप 'मोचन दीक्षा यन्त्र' १०५)रु० की वी०पी० से भेज रहे हैं, इस वी०पी को छुड़वा लें और सिद्ध पाप मोचन दीक्षा यन्त्र पहले से ही मंगवा कर अपने पास सुरक्षित रख लें।
- दिनांक १२-३-९१ को प्रातः ७ बजे स्नान कर पीली धोती धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय, तथा पूज्य गुरुदेव का चित्र अपने सामने रख ध्यान मग्न हो जांय।
- पूज्य गुरुदेव जोधपुर से १२-३-९१ को प्रातः ७ से ९ बजे के बीच विशेष ऊर्जा प्रत्येक साधनारत दीक्षा के इच्छुक शिष्य को "पाप मोचन दीक्षा" प्रदान करेंगे, और आप उस तपस्या अनुभूति एवं ऊर्जा को अनुभव भी करेंगे, शरीर में चैतन्य निखिल तत्व भी स्थापित होगा।

– अपने सम्पूर्ण आन्तरिक दोषों के निराकरण की यह दीक्षा हर शिष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

– ६ बजे गुरु आरती सम्पन्न कर, मन्त्र को [illegible] शिष्यों से स्पर्श करें और इसके लिए पूज्य गुरुदेव को धन्यवाद समर्पित पत्र अवश्य भेजें।

आपके जीवन का सौभाग्य

पाप मोचनी दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को एक नयी चेतना, दिव्यता एवं शक्ति देने में समर्थ है

प्रपत्र

आप "पाप मोचनी दीक्षा मन्त्र" १०५) रु० की वी०पी० से निम्न पते पर भेज दें, वी०पी० आने पर मैं छुड़ाने का वायदा करता हूं।

मेरी पत्रिका सदस्य संख्या ....

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

वी०पी० छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को सन् ८१ के लिए पत्रिका सदस्य बना कर रसीद मुझे भेज दें।

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

(यह प्रपत्र आप इसी रूप में अथवा एक कागज पर लिख कर भी भेज सकते हैं।)

वाह ! यह कैसा अद्भुत आनन्द प्रवाह है

आनन्द की प्राप्ति उस अमृत के समान है जो शरीर तथा मन के भीतर फैले जहर को शान्त कर शरीर के अणु-अणु को चैतन्य कर देती है, और जब इस आनन्द का निरन्तर प्रवाह होने लगता है, तो साधक एक मस्ती में खो जाता है, उसे अमृत रस पान प्राप्त होता है ।

पूज्य गुरुदेव के शिष्य, उनके अमृत वचनों, उनकी कृतियों में दिये गये वर्णन के अनुसार अलग-अलग रूप से साधनाएं सम्पन्न करते है, कोई ध्यान योग को महत्व देता है तो कोई जप योग को, कोई मन्त्र योग को महत्व देता है तो कोई तन्त्र योग को, इन सब का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति ही है, इस आनन्द को अनुभव करने हेतु कोई माध्यम या सहारा ले, लेकिन लक्ष्य यही होना चाहिए कि इस आनन्द तत्व की पूर्ण प्राप्ति हो जाय ।

शिष्य–साधक

शिष्य हो अथवा साधक, वह तो अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए नये-नये मार्ग ढूंढ़ता है, एक अबोध बालक की भांति अपने गुरु से बार-बार प्रश्न पूछता है, रहस्यों को समझने का प्रयत्न करता है ।

जब साधक शिष्य खो जाता है, अपना सर्वस्व सौंप देता है, अपने चिन्तन को एक रूपता दे देता है, तो उसे सब कुछ प्राप्ति से कौन रोक सकता ।

पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में कुछ समय से एक नयी प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है, पहले शिष्य अपने आप में अकेला चुप-चाप गुरु मन्त्र का जप, ध्यान अथवा साधना सम्पन्न करता था, लेकिन अब तो कई स्थानों पर शिष्यों ने मिल कर अपने समान विचारों के अनुसार सामूहिक रूप से कार्य करना प्रारम्भ किया है, शिष्यों ने यह विचार किया कि सबका लक्ष्य तो गुरु तत्व की पूर्ण प्राप्ति ही है और गुरु-कृपा को प्राप्त करना है तो फिर सामूहिक कार्यक्रम क्यों न किये जांय ?

यह महा अभियान स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे रूप में प्रारम्भ हुआ, लेकिन आज एक प्रकार से आन्दोलन का, जन चेतना का रूप ले लिया है ।

सामूहिक कार्यक्रम किस प्रकार ?

जो सच्चा शिष्य-साधक है, उसे उत्साही तो होना ही पड़ेगा, क्योंकि पूज्य गुरुदेव का प्रथम कथन यही है, कि मुझे मुर्दा लोगों की भीड़ की बजाय थोड़े से जीवन्त, उत्साही शिष्य चाहिए, ऐसे उत्साही साधक अपने क्षेत्र में अन्य साधकों से सम्पर्क करते हैं, साधना, धर्म, जप इत्यादि में रुचि रखने वाले, लोगों से सम्पर्क करते हैं, और सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित होते हैं, सब लोग परामर्श कर अपनी सुविधा के अनुसार रविवार अथवा अवकाश का कोई अन्य दिन निश्चित कर किसी एक साधक के यहां अथवा किसी मन्दिर इत्यादि में एकत्र हो कर सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर गुरु चित्र का पूजन करते हैं, इसके बाद सभी लोग सामूहिक रूप से गुरु मन्त्र का जप प्रारम्भ करते हैं, इस सामूहिक जप में इतना आनन्द आता है, कि लोग अपने आपको भूल जाते हैं, चित्त हलका हो कर सुमधुर आनन्दमय वातावरण में तैरता अनुभव होता है, और इसी प्रसन्नता में कार्यक्रम का समायोजन गुरु आरती से पूर्ण करते हैं, साधना, योग इत्यादि के विषय में चर्चाएं होती हैं, अपने-अपने ध्यान के अनुसार प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं ।

कई स्थानों पर प्रत्येक रविवार को गुरु पूजन गुरु मन्त्र जप के पश्चात् कोई एक विशेष साधना पत्रिका में जिस रूप में दी हुई होती है, उसी रूप में

सामूहिक रूप से सम्पन्न करते हैं, यज्ञ इत्यादि का आयोजन भी किया जाता है, सामूहिक कार्यक्रम-साधना का समापन गुरु आरती से, गुरु पूजन से किया जाता है, सब लोग आपस में सहयोग कर भोज का भी आयोजन कर गुरु प्रसाद प्रेम से ग्रहण करते हैं।

इन सब आयोजनों में कई साधकों को विशेष अनुभूतियां हुई हैं, इन साधकों के पत्र कार्यालय को प्राप्त होते रहते हैं, आइये, देखें कुछ साधकों के विचार व अनुभूतियां—

श्री हरीश प्रसाद—नैनीताल

"जब मैं गुरु मन्त्र का जप कर भगवती जगदम्बा के नवार्ण मन्त्र का जप कर रहा था तो एकाएक दीपक की ज्योति तीव्र हो गई और आप (गुरुदेव) पीछे खड़े दिखाई दिये तथा सामने ज्योति के ऊपर भगवती जगदम्बा का दिव्य रूप साकार हुआ, हे गुरुदेव! इस अनुभूति में ऐसा आनन्द आया कि नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगी।"

श्री विनोद कुमार राव—लखनऊ

"पत्रिका सदस्य बनने के पश्चात् मैं साधनाएं सम्पन्न नहीं करता था, केवल पत्रिका पढ़ कर रख देता था, इसके पश्चात् मैंने आपसे दीक्षा ली, और पत्रिका में दी गई विधि के अनुसार साधनाएं प्रारम्भ की, तब से मेरे घर पर आपकी विशेष कृपा हो गई, बहिन का विवाह ८ मई ९० को था, धन की कोई व्यवस्था नहीं थी तब मैंने एक दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में संकल्प ले कर गुरु मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप किया और उसके पश्चात् कुबेर साधना सम्पन्न की, विवाह की व्यवस्था जैसे अपने आप हो गई और शानदार ढंग से मैंने विवाह सम्पन्न कराया।

श्री उद्धवराज महाराज—उद्गीर लातुर महाराष्ट्र

श्री अमीर पाटिल से लेकर पत्रिका पढ़ी, आपके जीवन-चरित्र के बारे में जानने का प्रयास किया, कुछ मन्त्र जप का ही प्रयोग हमने किया, उसका बहुत अनुभव तथा अनुभूति हुई है, लेकिन मन की प्यास नहीं बुझती।

श्री राजेश कटिहार—बैरी कानपुर उत्तर प्रदेश

मैंने अपने कुछ मित्रों के साथ अपने मोहल्ले के मन्दिर में सामूहिक गुरु मन्त्र, गुरु पूजन कार्यक्रम प्रारम्भ किया कुछ लोग केवल उत्सुकतावश आये, लेकिन जब सामूहिक मन्त्र जप चल रहा था तो सबको ऐसा अनुभव हुआ कि पूरा वातावरण डोल रहा है, इस कार्यक्रम के पश्चात् मैंने दूसरे गांवों में जा कर यह कार्यक्रम सम्पन्न कराया, स्थान-स्थान पर विचित्र अनुभूतियां हुईं, गुरुदेव साक्षात् रूप से उपस्थित दिखाई दिये, जिसने भी भाग लिया, उन सब ने नियमित रूप से गुरु मन्त्र जप प्रारम्भ कर दिया है।

एक स्थान पर हमने इस कार्यक्रम को ५० लोगों के साथ प्रारम्भ किया, और सायंकाल इतने ही लोगों के भोजन की भी व्यवस्था थी, लेकिन कार्यक्रम समाप्त होते-होते करीब २५० लोग हो गये थे, चिन्ता हो गई कि गुरु प्रसाद तो केवल ५० लोगों के लिए ही है, अब क्या होगा? भोज प्रारम्भ हो गया और सभी भोजन करने बैठ गये और हमने सभी २५० लोगों को भोजन करा दिया फिर भी भोजन बच गया, गुरु कृपा का यह रहस्य समझ नहीं पा रहा हूं।

अब तो मैंने पूरा जीवन ही इस कार्य हेतु समर्पित कर दिया है, स्थान-स्थान पर जा कर पत्रिका सदस्यों, धार्मिक सज्जनों, और श्रद्धालुओं के साथ आयोजन सम्पन्न कराता हूं, प्रत्येक साधक को कुछ न कुछ अनुभूति, तथा साधना का फल अवश्य ही प्राप्त होता है, चिन्ताएं जैसे हवा में विलीन हो जाती हैं। ●

समाचार दर्शन

विविध गतिविधियां

पूज्य गुरुदेव की कृपा से **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** के कार्य में जो विस्तार हो रहा है, उसमें आप सभी योग्य समर्पित साधकों, शिष्यों का सहयोग बराबर मिल रहा है, गुरुदेव तीर्थ जोधपुर में अब प्रति सप्ताह यज्ञ का कार्य प्रारम्भ किया गया है, साधक स्वयं यज्ञ में बैठ कर आहुतियां देकर अपनी साधना पूर्ण करते हैं।

साधकों ने जो संगठन बनाने का और उसमें विस्तार करने का बीड़ा उठाया था, वह सुचारु अवश्य है, गुरु मन्त्र जप, यज्ञ पूजा साधना, चर्चा परिचर्चा के कार्यक्रम विविध स्थानों में चल रहे हैं, इसमें हर साधक को, सहयोग करना पड़ेगा, अपना कुछ समय देना ही पड़ेगा।

मध्य प्रदेश में अब तक **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** की ११७ शाखाएं प्रारम्भ हो चुकी हैं, उत्तर-प्रदेश में यह संख्या १८९ पहुंच गई है, संगठन केवल जिले के स्तर पर ही नहीं, प्रत्येक तहसील और गांव के स्तर पर होना चाहिए, महाराष्ट्र में भी उत्साह है विशेष कार्यक्रम सम्पन्न किये गये, सबका लक्ष्य एक ही है तो फिर आपसी मतभेदों को भुला कर अपनी " ईगो " को छोड़कर मिल-जुल कर कार्य करना पड़ेगा।

गुरुदेव कब-कब जोधपुर में रहेंगे—

वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार १७ फरवरी से ५ मार्च तक पूज्य गुरुदेव जोधपुर में ही रहेंगे।

शिष्य का यह कर्तव्य है, कि जब भी उसके मन में गुरु से प्रत्यक्ष भेंट की इच्छा उत्पन्न हो तो गुरु तीर्थ में जाकर गुरु से आशीर्वाद एवं अपने कार्यों हेतु मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त करें।

दिव्य निखिल ज्योति कार्यक्रम

नेपाल से रथ रवाना हो कर बिहार से गुजरता हुआ दिल्ली पहुँचेगा, बिहार स्थित साधकों को इसकी सूचना पत्रों द्वारा भेजी जा रही है।

अब तक **'दिव्य निखिल ज्योति सौभाग्य रथ'** के स्वागत तथा स्थान-स्थान पर जिस प्रकार से श्रेष्ठ कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं, तथा साधकों का जो उत्साह बना है, वह निःसंदेह हर्ष और उल्लास का विषय है।

दिव्य ज्योति सौभाग्य रथ दिनांक २१-२-९१ को दिल्ली पहुंचेगा तथा १० मार्च तक दिल्ली में ही स्थान-स्थान पर पूजा, सत्संग, कीर्तन, साधना, रुद्राभिषेक, गुरु पूजन, गुरु मन्त्र जप, नारायण हृदय स्तोत्र पाठ इत्यादि से सम्बन्धित विशेष कार्यक्रम सम्पन्न किये जाएंगे, दिल्ली से साधकों के जो पत्र आ रहे हैं, उसी प्रकार का कार्य हर प्रदेश के साधकों को करना है।

दिल्ली में १०८ कुण्डीय महायज्ञ

दिल्ली में रथ यात्रा के समापन कार्य के साथ ही दिल्ली के साधकों ने एक विशिष्ट महायज्ञ के आयोजन का प्रस्ताव किया है, अतः दिनांक ८, ९, १० मार्च को इस विशिष्ट सौभाग्य यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है, पूज्य गुरुदेव स्वयं इस अवसर पर दिल्ली पधारेंगे, और यज्ञ का कार्यक्रम उनके द्वारा सम्पन्न कराया जयेगा।

इस विशेष आयोजन के लिए श्री ज्ञानचंद भडाना दिल्ली ने अग्रदूत बन कर सारी जिम्मेदारी उठाई है, इस संबंध में पूर्ण जानकारी व्यवस्था आयोजन स्थल हेतु सभी साधक उनसे सम्पर्क कर सकते हैं।—

श्री ज्ञानचंद भडाना, शिवा प्रापर्टीज,
सूरजकुण्ड मोड़, प्रह्लादपुर, बदरपुर,
नई दिल्ली-४४, फोन नं० : ६८४५७०८

पत्रिका सदस्यों को इस यज्ञ हेतु आमन्त्रण है, इस हेतु कोई शुल्क नहीं है, अपनी इच्छानुसार जो भी सहयोग देना चाहें दे सकते हैं, जीवन का कार्य तो चलता ही रहेगा, ऐसे महा आयोजन में आपको आना ही है। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

प्रस्तुत अंक में जो साधनाएं दी गई हैं उनसे संबंधित सामग्री निम्नवत् है, आप जो भी साधनाएं सम्पन्न करना चाहते हों, उनसे संबंधित सामग्रियों का विवरण लिख कर पत्र द्वारा हमें सूचित कर दें, हम आपको वह सामग्री डाक व्यय सहित वी०पी० द्वारा भेजने की व्यवस्था कर देंगे।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्योछावर
बार्ताली स्तम्भन साधना	६	बार्ताली पूजन यन्त्र	२१०)रु०
		हरिद्रा माला	१०५)रु०
कामदा एकादशी प्रयोग	१३	१ तांत्रोक्त नारियल	२१)रु०
		१ तांत्रोक्त फल	२१)रु०
		१ मोती शंख	६०)रु०
		१ मधुरूपेण रुद्राक्ष	६०)रु०
		तांत्रोक्त माला	८०)रु०
कामदेव-रति प्रयोग	१७	अनंग यन्त्र	३००)रु०
		रति प्रीति सप्तबिन्दु मुद्रिका	१२०)रु०
		आनन्द मञ्जरी माला	१५०)रु०
सिद्धात्मा प्रयोग	२१	गुरु यन्त्र-चित्र	१५०)रु०
		गुरु रहस्य सिद्धि माला	१०५)रु०
दुर्गा साधना—सर्व सिद्धिदायक प्रयोग	२६	दुर्गा यन्त्र	१५०)रु०
		९ गोमती चक्र	६०)रु०
चण्डिका प्रयोग	२७	चण्डी यन्त्र	१५०)रु०
		२१ तांत्रोक्त फल	१०५)रु०
		१०८ कमलबीज	१०१)रु०
पापमोचनी दीक्षा प्रयोग	३३	पाप मोचनी दीक्षा यन्त्र	१२०)रु०
		रुद्राक्ष माला (छोटा दाना)	३००)रु०

छपते छपते

पत्रिका के इस अंक के प्रेस में जाने के समय नेपाल के शिवरात्रि कार्यक्रम एवं यश तथा भव्य शिविर के जो समाचार प्राप्त हुए वे अत्यन्त आनन्ददायक हैं।

पूरे भारतवर्ष से आये साधकों ने कार्यक्रम में जिस उत्साह से भाग लिया वह निश्चय ही उनके जीवन का मोड़ है, हजार-हजार कंठों से एक साथ हर हर महादेव तथा मंत्रों के साथ रुद्राभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

चैतन्य तीर्थ बाबा पशुपतिनाथ की तपस्या की नगरी काठमाण्डू में बागमती नदी के किनारे लक्ष्मी तथा शिव साधना पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न की गई, पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों को सुनने के लिए जिस प्रकार की भीड़ उमड़ पड़ती थी, उसे बहुत मुश्किल से नियन्त्रित किया गया, पूज्य गुरुदेव ने इस शिविर में जो साधनाएं सम्पन्न करायी और जो अमृत वचन उद्भावित किये उसकी आडियो तथा वीडियो कैसेट शीघ्र ही साधकों के लिए उपलब्ध करायी जायेगी। ●

रत्न चिकित्सा

विश्व के रत्न चिकित्सकों ने इस बात को अनुभव किया है, कि कठिन और असाध्य बीमारियों का इलाज रत्न चिकित्सा के माध्यम से संभव है, इसका तरीका अत्यन्त सरल है, इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, शोध से जिन ६ बीमारियों का प्रामाणिक उपचार रत्नों या उप-रत्नों के माध्यम से हुआ है उनका निष्कर्ष निम्न प्रकार से है—

बीमारियां और संबंधित रत्न

१-	दमा (अस्थमा)	:	"कवलेह" मणि
२-	मधुमेह या डाइबिटीज	:	"कारसुन" उपरत्न
३-	गर्भाशय से संबंधित बीमारियां	:	"हीरक" मणि
४-	नपुंसकता या नामर्दी	:	"अजक" उपरत्न
५-	लीवर में खराबी या उदर रोग	:	"विद्रुम" मणि
६-	किसी भी प्रकार की कमजोरी	:	"चरवक" मणि

इनके उपयोग की विधि भी सरल है, और ये रत्न या उपरत्न अथवा मणि कई-कई वर्षों तक उपयोगी बनी रहती है।

सेवन विधि—

इसके उपयोग की विधि अत्यन्त सरल है, रात को सोते समय तांबे के गिलास में लगभग सौ ग्राम पानी भर कर उसमें संबंधित रत्न डाल दें और उस पर तांबे का ही ढक्कन दे दें, सारी रात संबंधित रत्न उस पानी में पड़ा रहे।

प्रातः काल उस रत्न को पानी में से निकाल कर अलग डिब्बी में रख दें और संबंधित रोग का रोगी उस पानी को पी ले, उस रत्न का उपयोग फिर दूसरे दिन इसी प्रकार किया जा सकता है।

इस प्रकार इस रत्न का उपयोग रोगी को तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि उसका रोग जड़ मूल से समाप्त नहीं हो जाता, यह प्रामाणिक और महत्वपूर्ण उपचार है जिसके माध्यम से आप स्वयं अपना, अपने परिवार का और आस पड़ोस का उपचार कर सकते हैं, इसका किसी भी प्रकार से कोई "साइड इफेक्ट" नहीं होता।

ये रत्न, उपरत्न अच्छे जौहरी की दुकान से प्राप्त हो सकते हैं, प्रत्येक रत्न, उपरत्न या मणि का अनुमानित व्यय ३३०)रु० हैं, जिसे आप सुरक्षित रूप से मंगा कर उसका उपयोग कर स्वस्थ एवं रोग मुक्त हो सकते हैं।

हनुमान जयन्ती—(३०-३-९१)

बल, वीर्य, पराक्रम साधना

हनुमत् साधना प्रयोग

भक्ति, साधना, शक्ति के साथ-साथ त्याग, तपस्या तथा बल का जो अद्भुत स्वरूप हनुमान में है, वह किसी अन्य देवता में नहीं मिलता और यही बात हनुमान साधना पर भी लागू होती है, साधक विशेष रीति से साधना नहीं कर सकता हो, संस्कृत का उसे गहन ज्ञान न हो, यज्ञ आदि अनुष्ठान नहीं कर सकता हो, तो उसे हनुमान साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

मंगलवार का दिन हनुमान जी का दिन ही माना जाता है, इस दिन साधक चाहे एक माला ही मंत्र जप क्यों न करें हनुमान ध्यान अवश्य करना चाहिए, जीवन में बल, वीर्य, बुद्धि, तेज, शक्ति के अतिरिक्त और है ही क्या, और हनुमान तो इन सब के ही तो देव हैं।

हनुमान जयन्ती के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल रंग की धोती पहिने, उससे पूर्व रात्रि का ब्रह्मचर्य पालन करे, अपने सामने हनुमान प्रतिमा एक ताम्र पात्र में स्थापित करे, पूरी प्रतिमा को तेल मिले हुए सिन्दूर से रंग कर स्वयं के भी सिन्दूर का तिलक लगाये, अब हनुमान प्रतिमा के सामने "८ बजरंग विग्रह" स्थापित करे, ये आठ बजरंग विग्रह्-गेहूं की आठ ढेरियां बना कर उस पर स्थापित कर आठों का क्रमशः पूजन करे।—

ॐ रामभक्ताय नमः। ॐ महातेजसे नमः। ॐ कपिराजाय नमः। ॐ महाबलाय नमः।
ॐ द्रोणाद्रिहाराय नमः, ॐ रुद्रावताराय नमः, ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः, ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः।

अब लाल डोरे से बांध कर "हनुमान कंकण" हनुमान मूर्ति के आगे स्थापित करें तथा उस पर लाल पुष्प, चंदन, तथा कपूर चढ़ाएं, प्रसाद स्वरूप गेहूं की मोटी रोटी पर गुड़ घी मिला कर एक थाली में अर्पित करें, तत्पश्चात् "मूंगा माला" से निम्न बीजमन्त्र का १२ माला जप करें, इसके बाद दो मंगलवार फिर यही प्रयोग करें।

बीज मन्त्र— ॥ ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा ॥

प्रत्येक साधना दिवस को मन्त्र जप के पश्चात् हनुमान कंकण को दायीं भुजा में धारण कर हनुमान चालीसा पाठ कर, आरती सम्पन्न करें। चढ़ाया हुआ प्रसाद स्वयं ग्रहण करें, आठों बजरंग विग्रह एक लाल कपड़े में बांध कर रख दें, किसी भी प्रकार की कामना, विशिष्ट इच्छा से संबंधित कार्य होने पर अपने सामने पूजा स्थान में सिन्दूर से लिख कर रखें तथा पूजा करें, निश्चित सफलता मिलती है

हनुमान साधना पवित्रता, सात्विकता, तथा पूर्ण भक्तिभाव से सम्पन्न करनी चाहिए, तामसी वस्तुएं अर्थात् मांस, मदिरा आदि न ग्रहण करें, तथा पूर्ण उत्साह, उमंग, श्रद्धा से कार्य सम्पन्न करें।

जब तक कोई बात अनुभव से सिद्ध नहीं हो जाती तब तक हृदय उसे स्वीकार नहीं करता, कभी संकट में, पीड़ा में, बाधा में, रोग तथा शत्रु बाधा में हनुमान मंत्र जप करके तो देखिए, प्रत्यक्ष प्रभाव आपको प्राप्त हो जायेगा।

आठ बजरंग विग्रह, हनुमान कंकण, मूंगा माला—"हनुमान सिद्धि साधना पैकेट" के रूप में—२४०)रु० ।